चन्दामामा
जुलाई १९९४
Rs 4
CHAN

PARLE
Parle-G
Par

वह शक्ति जिसने राजू को बनाया

कॅमल चैम्प

प्यारे दोस्तो,

आज स्कूल में बड़ा मज़ा आया. मैंने मस्ती-मस्ती में कॅमल ऑयल पेस्टल्स से एक सुन्दर सी तितली बनायी और उसे बोर्ड पर चिपका दिया. तितली सचमुच बड़ी सुन्दर बनी थी, उसके पंख ऐसे चमक रहे थे जैसे अभी उड़ जाएगी. मेरे कई दोस्त तो उसे सचमुच की तितली समझकर पकड़ने भी गये. और कहीं से दो तितलियां आकर उसके आसपास मंडराने भी लगी. शायद दोस्ती करने आयी थीं.

सच, खूब मज़ा आया. देखा मेरे कॅमल ऑयल पेस्टल्स तो असली तितलियों को भी छका सकते हैं. तो मानते हो ना मुझे कॅमल चैम्प!

तुम्हारा दोस्त,

राजू

विजेता रंग अपनाओ. कॅमल चैम्प बन जाओ.

कॅमलिन लिमिटेड, आर्ट मटीरियल डिवीज़न, जे.बी. नगर, अंधेरी (पूर्व), बंबई ४०००५९.

INTERACT VISION CLA/93/HIN

कॅमल चैम्प

प्रतियोगिता
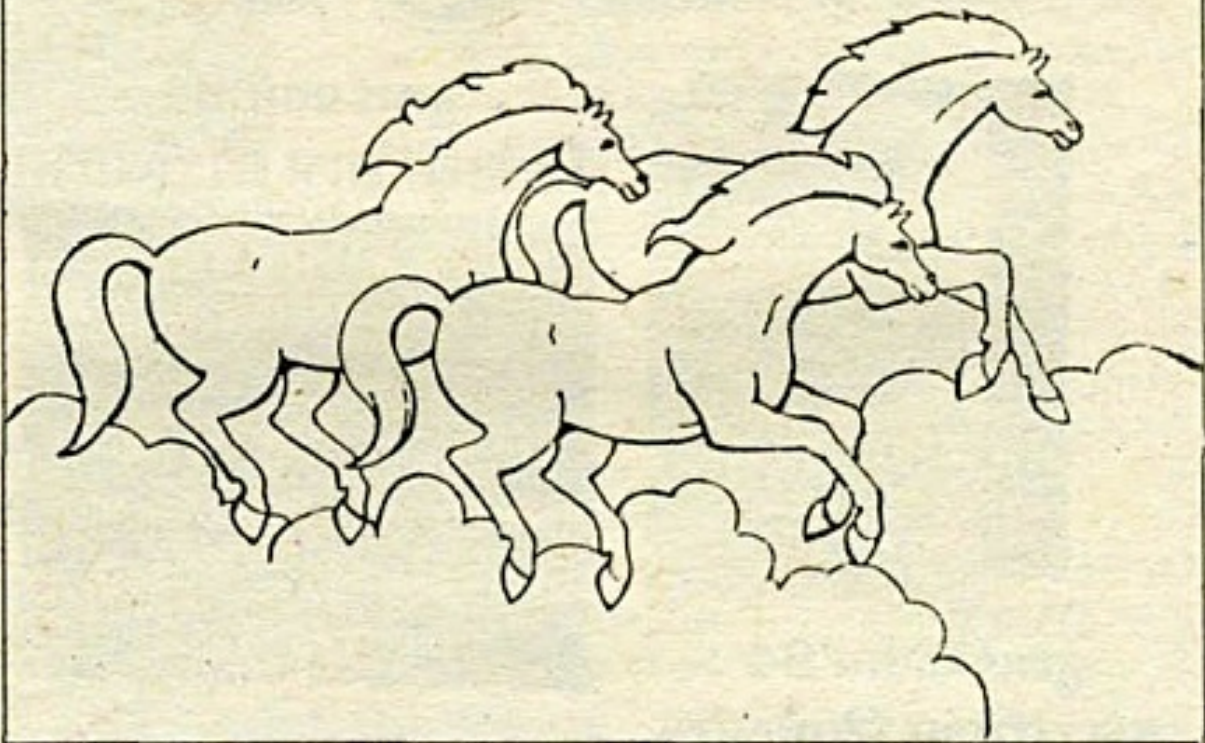
कॅमल विजेता बनने और आकर्षक पुरस्कार जीतने की आपको है चाह तो उसकी राह है बहुत आसान। बस, कॅमल के अनेक प्रकार के इंद्रधनुषी रंगों की छटा से रंग दीजिए इस चित्र को रंगों की अपनी सजीली कल्पना से। अपने मन के मुताबिक आप. कॅमल के क्रायोन वॅक्स, क्रायन्स क्रायल्स, ऑयल पेस्टल्स, वाटर कलर या पोस्टर कलर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। जीतने के लिए हैं ढेर सारे आकर्षक पुरस्कार **पहला पुरस्कार** कॅमल बम्पर मैक्सी पैक (150 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) **दूसरा पुरस्कार** कॅमल मिडी पैक (100 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद), **तीसरा पुरस्कार** कॅमल मिनी पैक (75 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) इसके अलावा 150 बेहतरीन रंगीन पुरस्कार – "आई एम ए कॅमल चैम्प" 2- डी स्टीकर मुफ्त।

हां, मैं कॅमल विजेता बनना चाहता हूं, रंगों से भरा चित्र इसके साथ लगा है

नाम ______________ उम्र ________ वर्ष, लड़का/लड़की (कृपया निशान लगाएं)

घर का पता ______________________________

____

____

स्कूल ______________________________

नियम एवं विनियम: ● प्रवेश शुल्क नहीं। खरीदने का कोई प्रमाण आवश्यक नहीं। ● इस प्रतियोगिता में 15 साल की उम्र के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। ● पूरी तरह से भरकर यह पूरा पृष्ठ हमें भेजना चाहिए। ● प्रवेश फॉर्म के रूप में इस पृष्ठ की फोटोकॉपी का इस्तेमाल किया जा सकता है। ● कैम्लिन लि. और इंटरैक्ट विज़न एडव.-एण्ड मार्के. प्रा. लि. के कर्मचारियों के बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते। ● प्रविष्टियां इस विज्ञापन के प्रकाशन के महीने के समाप्त होने के 15 दिनों के अंदर कैम्लिन लि. पोस्ट बैग सं. 37432, जे. बी. नगर, अंधेरी (पू.) बम्बई- 400 059. को भेजें। विजेताओं को अलग से सूचित किया जाएगा। पुरस्कार भेजने के लिए चार सप्ताह तक इंतजार करने की कृपा करें। निर्णायकों का निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा। कृपया इस कूपन को केवल अंग्रेजी में ही भरें।

कॅमल

सफलता के रंग

INTERACT VISION CL/94/7/IIIN-A

कॅम्लिन लिमिटेड, आर्ट मॅटेरियल डिविज़न, जे. बी. नगर, अंधेरी (पूर्व), बम्बई- 400 059.

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन
बालहंस
पाक्षिक
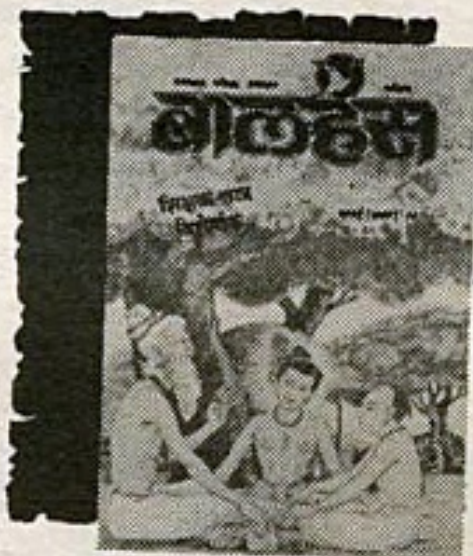
बालहंस

बालहंस
नव प्रतिभा
विशेषांक

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा में क्राँति

हाल ही में अपने संपादकीय में हमने बताया कि चीन में अगर माता-पिता बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए पाठशालाएँ नहीं भेजें तो उन्हें जुर्माना भरना पड़ेगा। हमारे भी देश के कुछ राज्यों में इस पद्धति को अमल में लाने के प्रयत्न हो कहे हैं। हो सकता है कि ऐसा क़दम उठाने के पीछे चीन की प्रेरणा हो।

संविधान-सभा ने भारत के संविधान को प्रारूप दिया है। बच्चों की उचित शिक्षा के अधिकार का भी इसमें उल्लेख है। किन्तु यह अनिवार्य शिक्षा के रूप में परिवर्तित किया गया। परंतु ऐसा भी नहीं हो पाया, क्योंकि विविध कारणों से बच्चों को अनिवार्य शिक्षा दे पाना संभव नहीं हो पाया। उन्हें अपने माता-पिता की सहायता या तो घर में रहकर अथवा काम करने की जगह पर उपस्थित होकर करनी पड़ती है। वे स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। माँ-बाप भी अपनी ग़रीबी की वजह से लाचार हैं। अपने घरों की दैनिक आवश्यकताओं के लिए बच्चों को स्वयं काम पर जाना पड़ता है और यों अपने माँ-बाप की आमदनी की बढ़ौती में वे सहायता पहुँचाते हैं। बच्चों के स्कूल ना जाने के अनेकों कारणों में से स्कूल का बहुत दूर होना भी एक मुख्य कारण है।

हाल ही में राज्य सरकारों तथा केंद्रीय सरकार के शिक्षा-सचिवोंकी बैठक हुई। उन्होने अपनी इस बैठक में विचार-विमर्श किया कि क्यों सब बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं? अगर जाते भी हों तो पढ़ाई क्यों ज़ारी नहीं रख पा रहे हैं? उनकी इस दयनीय स्थति की पृष्ठभूमि क्या हो सकती हैं?

कुछ शिक्षा-शास्त्रज्ञों का कहना है कि बच्चों पर शिक्षा लादी नहीं जानी चाहिये; स्कूल जाने के लिए उन्हें मजबूर नहीं करना चाहिये। उनसे कहना भी अनुचित है कि निश्चित अवधि में ही उन्हें स्कल जाना है, जब कि उनके माँ-बाप अपने घरेलू कामों में उनसे सहायता लेते होंगे। वे कहते हैं कि लंबी अवधि तक स्कूलों का खुला होना आवश्यक है। (संध्या और रात को भी) तभी बच्चे अपनी सुविधा के अनुसार स्कूल आ-जा सकते हैं। शिक्षा में क्या क्राँति हो रही है?

वर्ष : ४७ जुलाई१९९४ अंक : ११

एक प्रति : रु. ४ /- वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

यही है प्राइम की विजेता रेखा.
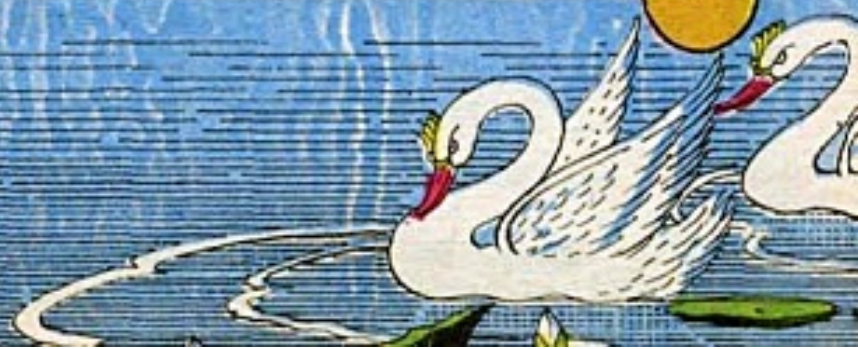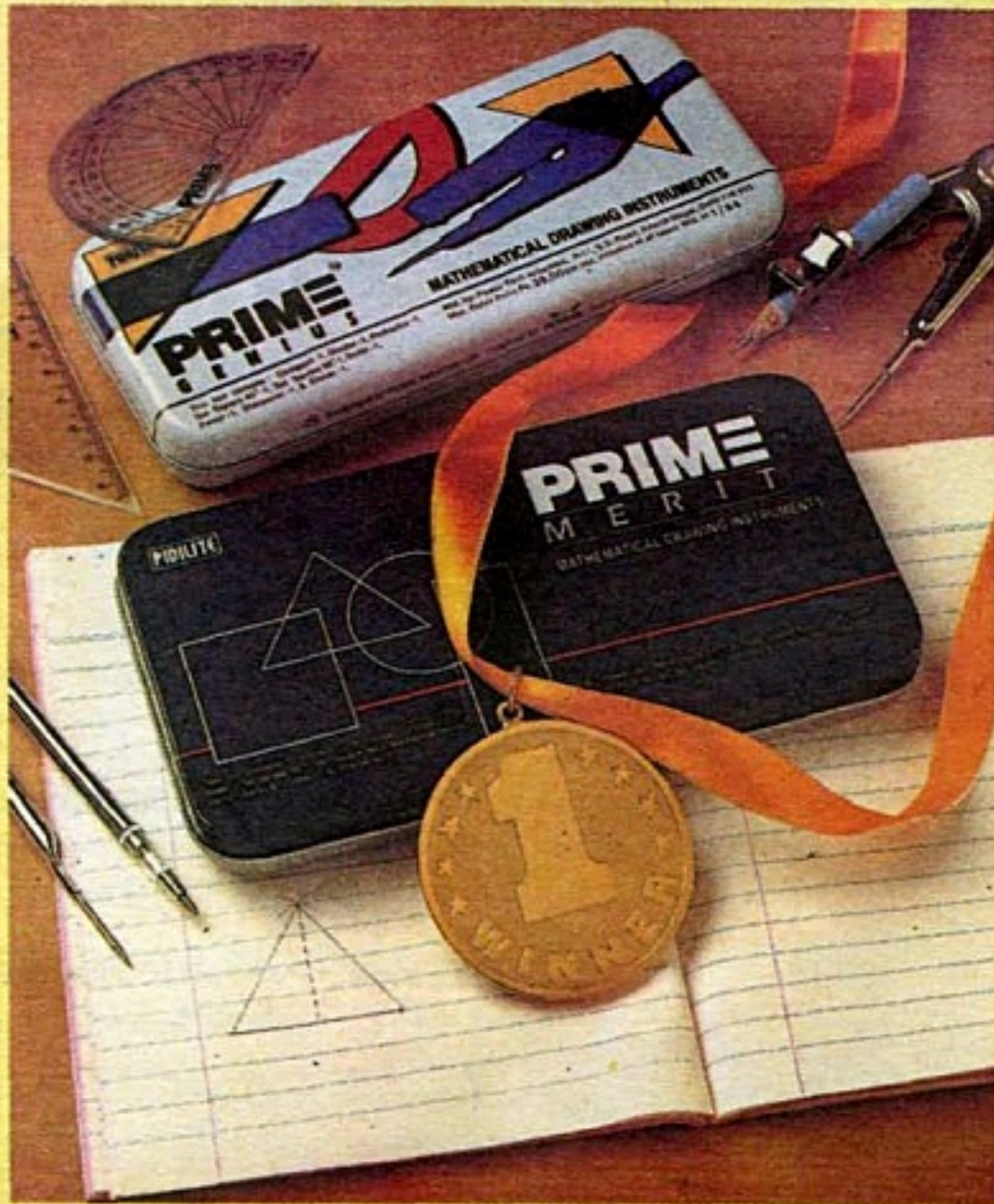
आ गए प्राइम जीनियस और प्राइम मेरिट. उत्कृष्ट दर्जे के कम्पास बॉक्स. यह अचूक कामगिरी, संपूर्ण नियंत्रण एवं उत्कृष्ट कार्यकुशलता के लिए ख़ास तौर पर तैयार किए गए हैं.

तो दीजिए अपने नन्हें-मुन्नें को प्राइम. जिसके सहारे वो चढ़ता जाए कामयाबी की सीढ़ियां, और बने विजेता.

PID 8 94 HN

समाचार-विशेषताएँ

दक्षिण अफ्रीका - एक नूतन अध्याय

"मैं शपथ खाता हूँ कि दक्षिण अफ्रीका विश्वसनीय रूप से गणतंत्र राज्य बना रहेगा" मई दस को नेल्सन मंडेला ने यह घोषणा करते हुए अध्यक्ष-पद स्वीकार किया। इसके पिछले दिन ही नूतन संविधान सभा का प्रथम समावेश हुआ और वे एकमत से देश के अध्यक्ष चुने गये। यों वे दक्षिण अफ्रीका की काली जाति के प्रथम अध्यक्ष हुए।

दक्षिण अफ्रीका में उपलब्ध सोने तथा अन्य खनिज पदार्थों से आकर्षित होकर यूरोप देशवासियों ने यहाँ प्रवेश किया। तब से उन्होने स्थानीय काली जाति के लोगों का दमन शुरु कर दिया। १६५२ में डच की ईस्टइंडिया कंपनी ने केपटौन में प्रवेश किया और तब से वह अपने को विस्तृत करता गया। हिन्दू महासमुद्र, अरेबिया समुद्र तथा अटलांटिक महासमुद्र से गुज़रनेवाले जहाज़ दक्षिण अफ्रीका के अग्रभाग में स्थित 'केप आफ गुड होप' से होते हुए जाने लगे। इस प्रकार वह आमदनी का केंद्र बना तथा जहाज़ों के आने जाने का केंद्र स्थान बन गया। इस कारण से सौ सालों के अंदर ब्रिटेन ने वहाँ अपना अड्डा जमाया।

वहाँ जो गोरे लोग जम गये, उन्होने काली जाति के वासियों को वहाँ से खदेदना शुरू कर दिया। उन्होने उनपर पाबंदी भी लगा दी कि वे कुछ निर्धारित स्थानों के अंदर ही रहेंगे। उन्होने व्यापारों, अस्पतालों तथा पाठशालाओं में उनको बहिष्कृत किया। इस प्रकार काली जातियों के लोगों के अधिकार छीन लिये गये, जहाँ के वे स्थिर निवासी रहे। अल्पसंख्यक गोरों ने जातिभेद का सिद्धांत अपनाया और काली जाति के लोगों के सर्वाधिकार छीन लिये।

हमारे भारतीय भी जातिभेद के शिकार हुए। ये सब गुजरात, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत से गये हुए थे और वहाँ के निवासी बन चुके थे। बारिस्टर की उपाधि पाते हुए भी मोहनदास करमचंद गांधी रेल से उतार दिये गये, क्योंकि वे काली जाति के थे। यह घटना सर्वविदित है। यह घटना १८९० में घटी। गांधीजी ने इस जातिभेद के सिद्धांत का डटकर मुक़ाबला किया और उन्होने वहाँ 'नेटाल इन्डियन कांग्रेस' की स्थापना की। तब से उन्होने अहिंसात्मक आंदोलन ज़ारी रखा।

गांधी के चलाये गये इस सत्याग्रह के आँदोलन से नेल्सन मंडेला प्रभावित हुए। उन्होने भी नेशनल

कांग्रेस (ए.एन.सी.) के द्वारा अपनी जाति के हक़ों के लिए संघर्ष शुरू कर दिया। १९४८ में सरकार ने जातिभेद को कानून् कर दिया। इससे काली जाति के लोगों ने गोरों को अपने देश से निकालने के प्रयास और तीव्र कर दिया। यह 'ए.एन.सी.' के नेतृत्व में हुआ। गोरों की सरकार ने १९५२ में मंडेला को क़ैद किया और उन्हें आजीवन क़ैद की सज़ा दी। फिर भी 'ए.एन.सी.' अपना आँदोलन ज़ोर से चलाता रहा। १९८९ में डीक्लर्क इस देश के अध्यक्ष बने। वे इस समस्या के संबंध में गंभीर रूप से सोचते रहे। संसार के अत्यधिक देशों ने मानवों के अधिकारों के पुनरुथ्यान के लिए दक्षिण अफ़्रीका पर अनेकों प्रतिबंध लगाये। दक्षिण अफ़्रीका में हो रहे क्रिकेट की क्रीडाओं का बहिष्कार बहुत-से देशों ने किया। ओलंपिक क्रीडाओं में भी दक्षिण अफ़्रीका भाग नहीं ले पाया। आख़िर डीक्लर्क ने जातिभेद के कानून को रद्द किया और नेल्सन मंडेला को जेल से रिहा कर दिया। अल्पसंख्यक गोरों की सरकार से तथा जुलुस जैसी काली जाति के नेताओं से चर्चाएँ चलाने के लिए मंडेला ने अपनी सहमति दी। उन्होने अपनी चर्चाओं में इस बात पर ज़ोर दिया कि काली जाति के लोग भी चुनाव में भाग लें और संसद के सदस्य बन सकें। अपने इस प्रयास में वे सफल हुए। आम चुनाव की तारीख़ भी मुक़र्रर हुई। चुनाव न्यायबद्ध हों, स्वेच्छा से हों, इसका पूरा ध्यान रखा गया। संसार के अनेकों देशों ने भी इसपर निगरानी रखने के लिए अपने-अपने प्रतिनिधियों को वहाँ भेजा। जो भी हो. चुनाव शांतिपूर्वक हुए।
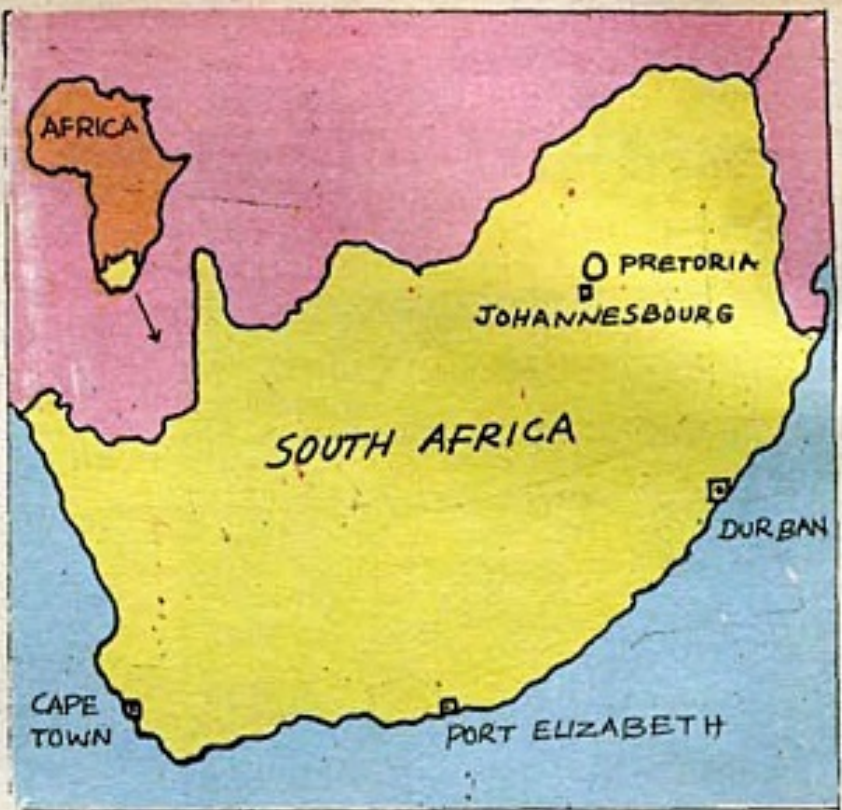
अफ़्रीका नेशनल कांग्रेस को ६२ प्रतिशत मत मिले। अध्यक्ष को चुनने का हक़ उसे प्राप्त हुआ। उसके नेता नेल्सन मंडेला एकमत से अध्यक्ष चुने गये। मंडेला ने अपने दल के एक नेता को तथा पूर्व अध्यक्ष डीक्लर्क को उपाध्यक्ष बनाया। उनके मंत्रिमंडल में ३९ सदस्य हैं, जिनमें चार भारतीय भी हैं। विशिष्ट बात तो यह है कि एक भारतीय महिला संसद की अध्यक्षा चुना गयी।

अपने प्रारंभिक भाषण में नेल्सन मंडेला ने कहा "हम किसी भी प्रकार से भयभीत ना हों। मानवता चिरस्थायी रहे, फले-, फूले, यही मेरा प्रयत्न होगा। मैं ऐसे दक्षिण अफ़्रीका के निर्माण में लग जाऊँगा, जिसमें काले तथा गोरे लोग मिल-जुलकर रह सकें, गौरव-गरिमा से अपना जीवन बिता सकें"।

हमारा संपूर्ण विश्वास है कि संसार में सुप्रसिद्ध यह आजीवन राजनैतिक क़ैदी, महात्मा गाँधी के सिद्धांतों से प्रेरित यह महान व्यक्ति, उन सिद्धांतों को आचरण में रखेगा और संसार के लिए आदर्श बनेगा।

धन का मूल्य

सीताकर व्याज का व्यापार करता था। कर्ज के लिए उसके पास जो भी आते उनसे बहुत ही अच्छी तरह से पेश आता था। कोई कड़वी बात ही उसके मुँह से निकलती नहीं थी। इसलिए ज़रूरतमंद सब लोग उसी के पास कर्ज़ लेने आते थे। वसूली भी ऐसा ही करता था, किसी भी के मन को दुखाता नहीं था।

बहुत-से लोग उससे कर्ज़ लेने आते थे। लेकिन इतने सारे लोगों को अगर कर्ज़ देना हो तो उसकी संपत्ति भी पर्याप्त नहीं होगी। रोजबरोज़ उसके यहाँ आनेवाले कर्ज़दारों की संख्या बढ़ती जा रही थी। कर्ज़दारों के नाम व रक़म दर्ज करने तथा वसूली का ब्योरा लिखने उसने चार गुमाश्तों को भी काम पर रख लिया।

बहुत-से लोगों की ख्वाहिश थी कि वे भी व्याज का व्यापार करें। वसूली करने की कला से वे अनभिज्ञ थे, इसलिए यह व्यापार करने से सकुचा रहे थे। ऐसे लोगों में से चंद्रपाल भी एक था। वह यों तो पैसो के पीछे पागल तो नहीं या, किन्तु वह चाहता था कि उसके पास जो धन है, उससे थोड़ी बहुत कमाई हो।

चंद्रपाल ने खूब सोचा-विचारा और एक उपाय सोचा। सीताकर हर सौ पर पंद्रह रुपयों का व्याज वसूल करता है। उसने सोचा, मैं साढ़े सात रुपयो का ही व्याज लूँगा। उसके व्याज में से आधा घटाने से सभी लोग मुझसे ही कर्ज़ लेने आयेंगे। लोग इस बात के लिए उसके कृतज्ञ भी होंगे कि कम व्याज ले रहा है।

चंद्रपाल ने यह उपाय अपनी पत्नी को सुनाया। वह उससे भी ज़्यादा अक़्लमंद थी। पति के उपाय पर वह थोड़ी देर सोचती रही और फिर बोली "जल्दबाजी मत कीजिये। अगर आप कर्ज़ देते जाएँगे, तो हमारी सारी जायदाद हमसे छिन जायेगी। हम देखते-देखते दरिद्र हो जाएँगे।

सरन तेजा

सीताकर अधिक ब्याज वसूल करता है। इसीसे उसे वसूल करने में दिक्कतें हो रही हैं। अगर हम कम ब्याज में कर्ज़ दें तो वसूली में हमें और भी अधिक दिक्कतें होंगीं। इतने सारे ढ़ेर लोंगों से वसूल करना हमारे लिए कष्टतर कार्य होगा। सीताकर से हमारे जो अच्छे संबंध हैं, वे भी ख़राव हो जाएँगे। उसके हदय में हमारे लिए खोट पैदा हो जायेगी। अलावा इसके, वह हमारा रिश्तेदार भी है। धर्मराज जैसा गुणवान व सन्मार्गी युद्ध जीतने के रहस्य को जानने के लिए शत्रुवर्ग के भीष्म पितामह के पास गया। आप भी सीताकर के पास जाइये और उसकी सलाह लीजिये। फिर निर्णय करते हैं कि भविष्य में हमें क्या करना है?''

चंद्रपाल को पत्नी की ये बातें ठीक लगीं। वह सीताकर के पास आया। सीताकर ने कहा "तुम मेरे पास आये, यह अच्छा ही हुआ। ब्याज का व्यापार हर किसी के बास की बात नहीं। धन से व्यापार करना तलवार की धार पर चलने के समान है। मैं भली-भाँति जानता हूँ कि इस व्यापार में क्या-क्या कष्ट और सुख हैं। इसीलिए अपना यह व्यापार और बड़े पैमाने पर करने की सोच रहा हूँ। उसके लिए मुझे और बहुत-सा धन चाहिये। तुम जैसे धनवान अपना धन मुझे दे तो सौ के दस रुपयों के हिसाब से ब्याज तुम्हें देता जाऊँगा। तुम्हारा धन मैं दूसरों को ब्याज पर दूँगा लाभ कमाऊँगा। लेकिन हाँ, एक शर्त है, जो लोग मेरे पास अपना धन सुरक्षित रखेगे, उन्हें पाँच सालों तक अपना धन वापस माँगना नहीं चाहिये''।

चंद्रपाल को लगा कि यह पद्धति सही है। बिना किसी मेहनत के अपने मूल धन पर ब्याज बराबर मिलता रहे तो इससे और क्या चाहिये। वह तो साढ़े सात रूपये ही ब्याज के रुप में वसूल करना चाहता था, लेकिन सीताकर तो दस रुपयों के हिसाब से ब्याज देनेवाला है। सब कुछ तो ठीक-ठाक है। लेकिन पाँच साल की अवधि उसे लंबी लगने लगी। उसने सोचा कि इतनी लंबी अवधि तक चुप रह जाना संभव है? अगर बीच में ज़रूरत पड़ जाए तो क्या किया जाए और किससे पूछें?

चंद्रपाल ने सीताकर से अपना संदेह व्यक्त

किया। उसके संदेह का निवारण करते हुए उसने कहा "अगर ऐसी आवश्यकता आ पड़े तो मुझी से कर्ज़ लो। तुम्हारे मूल धन से तीन चौथाई कर्ज़ मैं दूँगा। चूँकि तुम्हारी रक़म मेरे पास है, इसलिए साढ़े बारह रुपये के हिसाव से ही ब्याज वसूल करूँगा। उसमे से दस प्रतिशत का भाग तो तुम्हें मिलेगा ही। मतलब यह हुआ कि ढ़ाई प्रतिशत के हिसाब से ही ब्याज वसूल करूँगा। अगर तुमने जल्दी ही कर्ज़ चुका दिया तो नुक़सान भी तुम्हारा कम होगा"।

सीताकर की बातों से वह चकरा गया। जवाब दिये बिना वह वहाँ से चल पड़ा और अपनी पत्नी से सलाह माँगी।

वह खुश होती हुई बोली "यह प्रस्ताव अच्छा है। हर साल ऐसे तो अपने खेतों से आमदनी भी होती रहती है। उस आमदनी से हम अपना खर्चा चलाएँगे। हमारे पास पैसे हैं, इसलिए हम अनावश्यक खर्चा भी करते जा रहे हैं। ब्याज मिलने की आशा में हम और भी पैसे इकठ्ठे करने की कोशिश में लगेंगे। अगर हमें स्वयं ब्याज चुकाना हो तो हम संभल जाएँगे। ज़रूरत पड़ने पर ही कर्ज़ लेंगे। इस प्रकार के बचाव से तथा अनावश्यक खर्च से दूर रहने से हमारी जायदाद भी दुगुनी तिगुनी हो जायेगी"।

चंद्रपाल बिना और कुछ सोचे ही थोड़ी रक़म सीताकर को दे आया।

चंद्रराय के बग़ल में ही वीरभद्र रहता था। वे दोनों बचपन के दोस्त थे। जायदाद दोनों की बराबर की थी। लेकिन वीरभद्र खर्च ज्यादा करता था। उसकी आमदनी उसके लिए काफ़ी नहीं पडती थी, इसलिए चंद्रपाल से कभी-कभी कर्ज़ लेता और वापस करता था। लेकिन जब से चंद्रपाल ने कर्ज़ देने का काम शरू किया, तव से उसे वह दे नहीं पाता था।

"अनावश्यक ख़र्च मत करो। किफायत बरतो। जो बचता है, सीताकर को दो और ब्याज लेते रहो। तुम भी सुखी रहोगे और तुम्हारे बच्चे भी।" चंद्रपाल ने उसे सलाह दी।

वीरभद्र को उसकी सलाह नहीं जँची। उसने अपनी पत्नी से दोस्त की बतायी बात बतायी। तो उसने कहा "हर एक की अपनी-अपनी पद्धति है। कुछ लोग धन सुरक्षित रखते हैं,

कुछ लोग धन से सुख पाते हैं। हम उस सुखी वर्ग के हैं''।

इसके कुछ दिनों बाद वीरभद्र के खेत में मिर्च की अच्छी फ़सल हुई। उसे बेचने पर उसे चार हज़ार रुपये मिले। घर का खर्चा छोड़कर अब उसके हाथ में तीन हज़ार रुपये बचे। उसकी पत्नी ने उस रक़म से हीरों का हार बनवाना चाहा। वह सुनार के पास गयी तो उसने साफ़ बताया कि हीरों का हार बनवाने के लिए कम से कम पाँच हज़ार लगेंगे।

''आप के दोस्त को नारियल के पेड़ों से पाँच हज़ार की आमदनी हुई है। उसने अब तक वह रक़म सीताकर को दी नहीं होगी। जाइये और उनसे कर्ज़ लीजिये'' वीरभद्र की पत्नी ने कहा।

वीरभद्र ने चंद्रपाल से बात कही। पहले तो चंद्रपाल ने अपने मित्र को सलाह दी, उपदेश दिया ''हीरों के हार पर क्यों व्यर्थ खर्च करते हो, जाओ और यह रक़म सीताकर को दो।''

तब वीरभद्र ने कहा ''कुछ ऐसी ज़रूरतें हैं, जो तुम नहीं समझते, तुम्हारे दिमाग़ में नहीं चढ़तीं। अगर मैने हीरों का हार नहीं बनवाया तो मेरी पत्नी रूठेगी। उसके दुख से मर जायेगी। मैं इतना दुष्ट तो नहीं हूँ कि पैसों के लिए अपनी पत्नी का गला घोंट दूँ, मेरी ग़लती की वजह से वह मर जाए''।

तब चंद्रपाल ने कहा ''अच्छा तो एक काम करते हैं। नारियलों को बेचने से मुझे जो लाभ हुआ, वह रक़म मैं सीताकर को दे दूँगा। तुम्हें जो रक़म चाहिये, उसमें से कर्ज़ के रूप में लूँगा। वैसे तो वह सौ के लिए पंद्रह रूपयों का ब्याज लेता है, लेकिन जो अपना धन उसके पास रखते हैं, उनसे साढ़े बारह ही का ब्याज वसूल करता है। मतलब ढ़ाई रुपयो का फ़ायदा होगा। अपनी पत्नी की इच्छा की पूर्ति तुम आवश्यक समझ रहे हो। इसलिए मैने तुम्हें यह उपाय बताया। फिर तुम्हारी मर्ज़ी''।

यह ज़रूर है कि वीरभद्र खर्चीला है, आवश्यक या अनावश्यक खर्चों के लिए लोगों से पैसे भी लाता है, लेकिन आज तक उसने किसीसे कर्ज़ नहीं लिया। उसे लगा कि चंद्रपाल भी दोस्ती निभाने के लिए ही कर्ज़ दिलवाने का इंतज़ाम कर रहा है। उसने चुपचाप वीरभद्र की

सलाह मान ली।

चंद्रपाल स्वयं सीताकर के पास गया। उसे धन दिया और ब्याज पर पैसे लेकर, उन्हें चंद्रपाल को दिया। यह जानकर उसकी पत्नी के दिल को बड़ी ठेस लगी। उसने कहा "सोचा था कि आपके मित्र बडे भलमानस हैं। पैसों की बड़ी फ़िक्र है उन्होंने। मैत्री-धर्म भी भुला दिया।"

वीरभद्र ने अपनी पत्नी के लिए हीरों का हार बनवाया। उनको ब्याज चुकाना है, इसलिए पति-पत्नी ने बड़ी ही क़िफायत बरती और पैसे जुटाये। एक दिन दो हज़ार एक सौ रुपये लेकर वीरभद्र अपने मित्र चंद्रपाल के घर गया। चंद्रपाल ने गिना और एक सौ रुपये लौटाते हुए कहा "तुमने तो मुझसे दो हज़ार ही लिये थे, तो फिर यह अदना सौ क्यों?"

"वह पाँच महीनों का ब्याज है" वीरभद्र ने कहा।

"छी, कैसी बात कर रहे हो? मैं अपने दोस्त से क्या ब्याज वसूल करूँगा? हम बचपन के दोस्त हैं। तुमने मुझे ग़लत समझा है।" दुखी चंद्रपाल ने कहा।

वीरभद्र ने कहा "अब तुम्हारा मन बदल गया होगा। याद है, जब रक़म दी, तब तुमने क्या कहा था? तुमने कहा था कि अपनी रक़म यथावत् सीताकर को दूँगा और उसमें से तुम्हारे लिए कर्ज़ लाऊँगा।" वीरभद्र की बातों में कड़ुवापन था।

"तुम भी कैसे बुद्धू निकले, मैं तो तुम्हें समझाने के लिए हिसाब बता रहा था। मैंने तुमसे कहा भी था कि ब्याज कितना चुकाना पड़ेगा। मेरा तो यह अभिप्राय था कि ऐसा कहने पर तुम जान जाओगे कि धन का कितना मूल्य है। तुम्हें देने से मुझे नुक़सान भी होता है, यह मेरे लिए चेतावनी भी है। मेरा मतलब तो तुमसे ब्याज वसूल करने का नहीं था।"

वीरभद्र जान गया कि चंद्रपाल सच्चा मित्र है और यह भी जान गया कि धन कितना मूल्यवान है। उसने चंद्रपाल से क्षमा माँगी।

इसके बाद वीरभद्र ने ख़र्च कम किया। कभी थी किसीसे पैसे नहीं माँगे।

पुरस्कार का कारण

बिकानेर के भूपतिराय ने अपने जन्म-दिन के अवसर पर एक साहित्य-गोष्टि की आयोजना की। उसने घोषणा की कि जो परमशिव पर लगातार एक सौ कविताएँ सुनायेगा, उसे 'सरस्वती पुत्र' की उपधि दी जायेगी और साथ ही हजार अशर्फियाँ भी।

उस स्पर्धा में रजनीचंद्र नामक पच्चीस वर्ष की आयु का एक युवक तथा नारायण शर्मा नामक अस्सी वर्षो का एक वृद्ध समान प्रतिभाशाली प्रमाणित हुए। सभा में सब लोग यह जानने को उत्सुक थे कि महाराज किसको विजेता घोषित करेंगे।

ज़मींदार ने विचार-विमार्श के बाद घोषित किया कि नारायणशर्मा विजेता हैं। उन्हें उपाधि दी गयी और साथ ही हज़ार अशर्फ़ियाँ भी।

सभा की समाप्ति के बाद दीवान ने महाराज से पूछा "महाराज, क्या नारायण शर्मा को विजेता घोषित करने का कोई विशिष्ट कारण है?" ज़मींदार ने उत्तर दिया "है क्यों नहीं? दीवानजी, रजनीचंद्र युवक है। इस साल नहीं तो अगले साल या दो तीन सालों में वह स्पर्धाओ में भाग लेगा और जीत जायेगा। किन्तु नारायण शर्मा तो उस पके पत्ते की तरह हैं, जो किसी भी क्षण गिर सकता है। हमने नारायण शर्मा का आज सत्कार नहीं किया तो उन्हें पुरस्कृत करने का सौभाग्य हमें कभी भी नहीं मिलेगा। ऐसे भाग्य से शायद हम वंचित रह जाएँ।"

-आर. पट्टाभि

कीर्तिसिंह-२

(कोसल के राजा सुषेण का जिगरी दोस्त है जयसेन। उसकी पुत्री है कीर्तिसेना। कीर्तिसेना के शक्ति-सामर्थ्य की परीक्षा करने के लिए राजा ने उसे आरावली पर्वतों में जाकर विद्याभ्यास समाप्त करके लौटते हुए अपने पुत्र कीर्तिसिंह को अन्य मार्ग में मोड़कर बंदी बनाने की शर्त रखी। कीर्तिसेना ने अपनी सम्मति दी। जयसेन, राजा की इस शर्त पर पहले घबराया तो अवश्य, परंतु उसने अपने को संभाल लिया। उसने अपनी पुत्री को राजा की इस शर्त का गुढ़ार्थ समझाया तथा अपने पूर्वजों के बारे में विवरण दिया। जयसेन ने विचित्रवर्मा को बहुमूल्य तथा अद्भुत शक्तियों से भरा एक हार समर्पित किया। आखेट के लिए गये हुए विचित्रवर्मा को भूगर्भ में देवी शक्ति की मूर्ति मिली। उसके संबंध में शास्त्रज्ञों तथा आगमवेत्ताओं से सलाह-मशविरा करने वह राजधानी पहुँचा।)

राजा विचित्रवर्मा जैसे ही राजधानी पहुँचा, तब पहले पहल वह जयसेन से मिला। राजा का कहा हुआ सब कुछ सुनने के बाद जयसेन को आनंद भी हुआ और दुख भी।

इसके बाद दोनों में दीर्घ चर्चाएँ हुईं। विचारों का परस्पर आदान-प्रदान हुआ। आख़िर जयसेन तथा अन्यों ने निर्णय लिया कि उस देवी शक्ति की मूर्ति अब राजधानी में ना लायी जाए। वहाँ मंदिर बनाया जाए और मूर्ति की प्रतिष्ठापना की जाए। शास्त्रज्ञों ने यह भी बताया कि उस मूर्ति की उपलब्धि से जो लाभ हैं, वे वर्तमान राजा विचित्रवर्मा को प्राप्त नहीं हो सकते। अगली पीढ़ी में विचित्रवर्मा के वारिस पर देवी की कृपा होगी। वह वारिस देवी की कृपा से राज्य को विस्तीर्ण करेगा और संपूर्ण दक्षिणापथ का सम्राट बनेगा। उसकी कीर्ति दशों दिशाओं में व्याप्त होगी। उसके

लक्ष्मी गायत्री

शासन-काल में एक सुप्रसिद्ध नाम से वह देवी पुकारी जायेगी और प्रति दिन उसकी पूजाएँ होती रहेंगीं। यही नहीं, वह देवी महिमायभी मानी जायेगी। बहुत बड़े स्तर पर उत्सव मनाये जाएँगे।

यह सब कुछ सुनने के बाद विचित्रवर्मा जान गया कि उस रात को उसे आनंद क्यों हुआ और दुख भी क्यों हुआ। उसने अब अपना दुख भुला दिया, चिंता छोड़ दी और इस बात पर हर्षित होने लगा कि मेरा ही वंशज इस प्रतिष्ठा का कारक बनेगा। उसने जंगल में ही मंदिर बनवाया और उसमें मूर्ति की प्रतिष्टापना की। किन्तु जंगल में जाकर उसकी पूजाएँ करनेवाला कोई नहीं रहा। कुछ समय बाद लोगों ने उस मंदिर और उस मूर्ति की बात भुला दी।

विचित्रवर्मा को लगा कि यह सब कुछ दैवलीला है। अपने ही मन में शक्ति को प्रणाम करता हुआ चुप रह गया।

यो कुछ साल गुजर गये। हार के सहयोग से विचित्रवर्मा ने सुचारू रूप से अपना शासन चलाया, नाम कमाया। अपने राज्य में एक दो स्थलों पर भूमि को खुदवाया और उसमें जो निधियाँ प्राप्त हुई, उनसे जनोपयोगी काम करवाये। इससे उसकी ख्याति भी बढ़ी। हार की महिमा के संबंध-में जो बात तब तक गुप्त रखी गयी थी, वह धीरे-धीरे प्रकट होती गयी। लोग कहने लगे कि राजा विचित्रवर्मा तो अच्छे मानव हैं ही, किन्तु उनके बड़प्पन का मूलकारण हार ही है। हार की महिमा की व्याप्ति के साथ-साथ कष्टों का आरंभ हुआ।

दक्षिणापथ में तब से लेकर अब तक अत्यंत बलशाली तथा शश्य श्यामल देश है कोसल राज्य। कोसल के बाद कांभोज और नग दक्षिणापथ में बड़े राज्यों में से हैं। ये कोसल की पूर्वी दिशा में हैं। कोसल और नग राज्यों की सीमाओं के जंगलों में ही शक्ति का यह मंदिर है।

चक्रादित्य कांभोज राज्य का राजा था। वह ऐसे तो स्वयं अच्छा राजा था, परंतु असमर्थ था। उसके शासन-काल में जनता ने अनेकों कष्ट सहे। वहाँ की दुखी जनता कोसल राज्य तथा वहाँ स्थापति-सुव्यवस्थित राज्य के बारे में परस्पर

कहते रहते थे। वहाँ की जनता के सुखमयी जीवन के बारे में बाते करते रहते थे। क्रमश: काँभोज राज्य की जनता भी अपने कष्टों से तंग आकर कोसल आने लगी। दयालू विचित्रवर्मा ने उन सब शरणार्थियों को आश्रय दिया, उनके रहने के लिए आवश्यक प्रबंध किया तथा उनके पोषण की भी व्यवस्था की।

समय गुज़रता गया। विचित्रवर्मा तथा चक्रादित्य भी वृद्ध हो गये। विचित्रवर्मा का ज्येष्ट पुत्र जयवर्मा कोसल के सिंहासन पर आसीन हुआ। चक्रादित्य के ज्येष्ट पुत्र को सिंहासन पर आसीन होना चाहिये। लेकिन वह भी अपने पिता की ही तरह असमर्थ था। इन वास्तविकताओं से सुपरिचित उसके दूसरे पुत्र वरुणदत्त ने अपने पिता तथा भाई की असमर्थता का फ़ायदा उठाकर उन्हें बंदी बना दिया। राज्याधिकार को हस्तगत कर लिया। असमर्थता से भरे शासन से तंग आये हुए अधिकारी तथा जनता ने भी उसका साथ दिया। साधारणतया यह देखा गया है कि पीड़ित जनता परिवर्तन चाहती है। वह यह सोचने के लिए भी तैयार नही होती कि इस परिवर्तन से हमारा भला होगा या बुरा। उनमें यह आशा बंधी रहती है कि यह परिवर्तन हमारे लिए अच्छा ही प्रमाणित होगा। अगर अच्छा नहीं भी होगा तो कम से कम पुराने से तो बेहतर ही तो होगा।

विचित्रवर्मा का बेटा जयवर्मा अच्छा आदमी था; समर्थ था। परंतु विलासी था; मौज़-मस्ती करता था। चित्र-विचित्र विलास मंदिरों का उसने निर्माण करवाया। वह देश-विदेशों से आयी हुई नर्तकियों के नृत्य चाव से देखता। उन्हे बहुमूल्य पुरस्कार देता और बिदा करता था। ये उसके अत्यंत प्रिय लतें थीं। हाँ, जयवर्मा अच्छा राजा अवश्य था किन्तु क्या लाभ? ये लतें उसपर यों हावी हो गयीं कि उसे अपनी सुध ही ना रही। वह अपना कर्तव्य भूल गया। यह सत्य है कि किसी राजा का अच्छा होनी मात्र पर्याप्त नहीं है। उसमें अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा होती चाहिये। उसे अपने धर्म के प्रति जागरूक होना चाहिये। जो यह भूल जाता है, उसकी अवश्य ही अधोगति होती है। अपने बेटे के उसके इस व्यवहार से उसका पिता बहुत ही दुखी हुआ। जनता में भी

वजह से, जयवर्मा की जानकारी के बिना, उसने एक गुप्तचर-दल बनाया, जो समय-समय पर आवश्यक रहस्य उसे खोलते रहते थे। यों वह अपने पुत्र तथा राज्य के बारे में चौकन्ना था, सजग था। किन्तु वह हार अब भी अपने पुत्र जयवर्मा के गले में ही है, जो राज्याभिषेक के समय पहनाया गया था। उस अभूतपूर्व हार का बेटे के ही गले में होना ख़तरनाक बात है। शत्रु के हाथ में अगर वह चला जाए तो उसके, उसके राज्य के तथा उसकी जनता पर किसी भी क्षण विपत्ति आ गिर सकती है। अपने गुमराह बेटे से वह हार कैसे प्राप्त करे, इसी के बारे में वह गंभीर रूप से सोचने लगा। उसने बेटे की हर चर्या पर कड़ी निगरानी रखी।

उसकी बदनामी हुई।

यह पूरा वृत्तांत जानकर कांभोज राज्य के राजा वरुणदत्त ने कनकलता नामक एक नर्तकी को, अपना काम निकालने के लिए उसके पास भेजा। कनकलता ने अपनी चतुरता से उस अपूर्व हार को राजा से प्राप्त करने और उसे वरुणदत्त को देने का वचन दिया। यह बात भी तय हुई कि इसके एवज़ में उसे बहुमूल्य पुरस्कार दिये जायेंगे।

किन्तु वरुणदत्त एक रहस्य से अपरिचित था। यद्यपि विचित्रवर्मा ने अपने पुत्र को सिंहासन पर आसीन किया, परंतु वह राज्य-कार्य से पूर्ण रूप से हटा नहीं था। अपने पुत्र के विलासमयी जीवन को देखते हुए, उसकी कमियों को जानने की

वरुणदत्त की भेजी हुई कनकलता ने जिस क्षण कोसल राज्य में प्रवेश किया, उसी क्षण राजा को अपने गुप्तचरों द्वारा यह बात मालूम हो गयी। विचित्रवर्मा को संदेह हुआ कि अवश्य ही दाल में कुछ काला है। उन्होने तहक़ीकत शुरु की और आख़िर वह जान पाया कि कनकलता के आगमन के पीछे क्या रहस्य है?

यह समाचार पाते ही विचित्रवर्मा चिंतित हो गया और उसने जयसेन, से परामर्श किया। दोनों ने मिलकर एक प्रति व्यूह रचा। क्षणों में हूबहू ऐसा ही दिखनेवाला एक हार बनवाया गया। विश्वासपात्र एक व्यक्ति को यह काम सौंपा गया और उसने जयवर्मा के गले का महिमावान असली हार निकाला और नकली हार उसके गले

भी हो, वह हार पुन: प्राप्त करने का उपाय बताएँ।

पूरा सुनने के बाद गहरी साँस लेते हुए विचित्रवर्मा ने अपने पुत्र से कहा "अगर वह हार अपने वंशजों को छोड़कर किसी के हाथ लग जाए, तो उसका प्रभाव समाप्त हो जायेगा, उसकी महिमा चली जायेगी। इसलिए अच्छा यही है कि उसके बारे में हम भूल जाएँ"।

उसकी बातें सुनकर जयवर्मा के साथ-साथ जयसेन भी चकित हुआ। पिता की बातों से जयवर्मा को थोड़ी तसल्ली ज़रूर हुई, पर हार को खो देने के दुख में वह कुछ कहने जाने लगा।

विचित्रवर्मा ने अपने वेटे को टोकते हुए कहा "रसिकप्रिय राजा को अपने कलाभिमान के द्वारा कलाकारों को संतुष्ट अवश्य करना चाहिये, लेकिन उनके पीछे पागल होना नहीं चाहिये। उसे तो प्रजा के सुख-दुखों पर अपनी दृष्टि केंद्रित करनी चाहिये। सुखों के पीछे दौड़ना मूर्खता है। कमल के ऊपर की बूँद की मानिंद जो विलासभरा जीवन बितायेगा, वही उत्तम राजा बनेगा और कहलायेगा।"

जयवर्मा दुखी और लज्जित होकर वहाँ से चला गया। उसके चले जाने के बाद जयसेन को देखते हुए विचित्रवर्मा ने कहा "शायद तुम सोच रहे हो कि मैंने झूठ क्यों कह दिया? जयसेन, मुझे एक बात बताओ। जयवर्मा से हमने उस हार को लेने में क्यों आतुरता दिखायी?"

जयसेन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मौन रहा। तब विचित्रवर्मा ने कहा "तुम जानते हो

में ड़ाल दिया।

इसके बाद कनकलता ने अपने नृत्यों से, अपने हाव-भावों से, अपने चातुर्य से राजा को अपने वश में कर लिया, उसे अपना दास बना लिया। आनंदभरित जयवर्मा ने मस्ती में झूमते हुए अपना हार कनकलता के गले में ड़ाला और उसी रात वह उस हार को लेकर उस राज्य से रफ़ूचक्कर हो गयी।

कनकलता का षडयंत्र जानकर जयवर्मा तुरंत ही अपने पिता के पास दौड़ा-दौड़ा गया।

उस समय विचित्रवर्मा जयसेना के साथ शतरंज खेल रहा था। चूँकि, जयसेन मात्र वहाँ था, इसलिए जयवर्मा ने अपने पिता से अपनी ग़लती बतायी। उसने उनसे प्रार्थना की किं कैसे

जयसेन, अगर वह हार जयवर्मा के गले में होता तो उस नर्तकी की असलियत खुल जाती। उसे मालूम हो जाता कि वह झूठ बोल रही है और नाटक कर रही है। तब ना ही उसे वह धोखा दे पाती और ना ही हार ले जा पाती। यह रहस्य कांभोज राजा को भी मालूम है, फिर भी उसने हार को चुराने की योजना बनायी। हमने समय पर जयवर्मा के गले से वह हार निकलवाया। यह सब क्यों किया हमने? अपनी बलहीन मनोस्थिति तथा अपने उन्मत्त व्यवहार के कारण जयवर्मा दुर्बल है। उन्मत्त क्रियाओं में क्रियाशील मनुष्य भगवान प्रदत्त बौद्धिक शक्ति को खो देता है। अतींद्रिय शक्तियाँ मनुष्य की सहज मानसिक शक्तियों को पैनी करती हैं, उनमें निखार लाती हैं। अपनी दुर्बलता के कारण इन शक्तियों को वह उपयोग में ले नहीं पाता। वरुणदत्त मूर्ख है, पर इस सत्य को वह जान पाया है। इसीलिए उसने कनकलता के द्वारा जयवर्मा को और पंगु बनाना चाहा और हार पाना चाहा। मैंने जो कहा, ठीक है या नहीं''?

जयसेन अपना सर हिलाता हुआ मौन रह गया। विचित्रवर्मा मुस्कुराता हुआ बोला ''मैं जानता हूँ कि जयवर्मा पर मुझसे अधिक तुम्हारा वात्सल्य है। जयसेना, शायद तुम सोच रहे हो कि घायल औ, अपमानित जयवर्मा आगे सावधान रहेगा, उसे हार लौटाया जा सकता है। लेकिन ऐसी बातों में अभिमान से ज़्यादा जिम्मेदारी को, विश्वास से अधिक अविश्वास को प्रधानता देनी

चाहिये। दुर्बल स्वभाव के जयवर्मा में इस घटना से परिवर्तन आ सकता है या नहीं भी आ सकता है। अगर अब तक वरुणदत्त को पता लग गया हो कि उसे जो हार मिला है, वह असली नहीं, नकली हैं और असली हार हमारे ही पास है, तो वह किसी भी प्रकार का नित्कृष्ट कार्य करने पर तुल जायेगा। यह सब कुछ सोच-विचारने के बाद ही मैंने झूठ कहा था। जयवर्मा और वरूणदत्त इसी भुलावे मे रहेंगे कि असली हार अपनी महिमा खो चुका है। अब रही हार की बात।

अब उसके बारे में मैंने एक दृढ़ निर्णय लिया है। जो भी हो, यह तो निश्चित है कि मेरे वंश में एक महोन्नत व्यक्ति का जन्म होनेवाला है। तुमने जो हार पुरस्कार के रूप में प्रदान किया,

और मैने इस हार के द्वारा जो अपार संपत्ति प्राप्त की, यह सब उस महोन्नत मेरे वंशज को उपलब्ध हो"।

महाराज की राजनीति तथा न्याय की आपही आप प्रशंसा करने हुए जयसेन ने केवल अपना सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी।

विचित्रवर्मा ने जैसे कल्पना की थी, वैसे ही जयवर्मा से कहीं सारी बातें वरुणदत्त को मालूम हुई। उसने विश्वास कर लिया कि हार की महिमा सचमुच अदृश्य हो गयी है। उसे इस बात पर बहुत दुख भी हुआ।

जो हुआ, उसपर जयवर्मा बहुत ही चिंतित हुआ। उसमें अब आमूल परिवर्तन आ गया। उसने विलास से भरा जीवन ठुकरा दिया। जिम्मेदार राजा की तरह शासन चलाने लगा। कोसल की जनता में अब राजा के प्रति विश्वास तथा प्रेम पनपा।

महाराज विचित्रवर्मा को अपने पुत्र में आये हुए परिवर्तन को देखकर बहुत आनंद हुआ। इस घटना के कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हुई। विचित्रवर्मा के मरणोपरांत जयसेन भी स्वर्ग सिधारा। मृत्यु के पहले जयसेना जयवर्मा से मिला। उसे जो भी हुआ, सब कुछ बताया और कहा "पुत्र, तुममें जो परिवर्तन हुआ, उसे देखते हुए मैंने महाराज से वह हार तुम्हें देने की प्रार्थना की। परंतु उन्होने इसके लिए अपनी स्वीकृति नहीं दी। उन्होने कहा "मालूम नहीं, क्यों ऐसा संकल्प मेरे मन मे जगा है। अब मैं उस संकल्प को बदलूँगा नहीं। मेरा विश्वास है कि मेरा विश्वास सही है। जयसेना, अच्छा यही होगा कि हम उस बात को भुला दें। इस हार को पहनने का हक़दार जयवर्मा का पुत्र हो सकता है अथवा उसका पोता? हार तो मेरे ही वंश का होकर रहेगा, परायों के हाथों में तो वह नहीं जायेगा।" उन्होने मुझसे भी नहीं बताया कि वह हार कहाँ छिपा रखा है। एक पत्र मुझसे लिखवाया और मुझसे कहा कि तुम्हारे मरने के पहले मैं वह पत्र तुम्हें दूँ। लो यह पत्र।" कहते हुए जयसेन ने हाथी के दाँतों की बनी एक छोटी पेटी उसे दी।

(सशेष)

अपराध- दंड

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया और पेड़ से शव को उतारा। उसे अपनी भुजाओं पर ड़ाल ली और मौन हो श्मशान की ओर अग्रसर हुआ। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, आधी रात का समय है, भयानक वातावरण है। ना मालूम, कितने भूत-प्रेत इस श्मशान में होंगे? फिर भी तुम निर्भीक होकर, निघड़क चले जा रहे हो। अपने बोझ की भी तुम्हे परवाह नहीं। तुम्हारे माथे पर थकान की कोई सिकुडन भी नहीं। तुम्हारे चेहरे पर स्वेद की एक बूँद भी नहीं। तुम इतने कष्ट उठा रहे हो, फिर भी लगता है, थके ही नहीं हो। कुछ भी कहो, तुम्हारा मनोबल अद्भुत है, अविस्मरणीय है। किन्तु मेरी समझ में आ ही नहीं पा रहा है कि किस लक्ष्य को साधने के लिए तुम यों रत हो, मग्न हो। कुछ लोगों का दावा है कि अपनी अलौकिक शक्तियों के द्वारा हम सब कुछ साध सकते हैं। उनके दावे में सत्य

बैताल कथा

क्या है और असत्य क्या? यह बात बाद सोचेंगे। तुम्हारी लगन तथा हठ को देखते हुए मुझे लगता है कि ऐसी शक्तियों का दावा करनेवालों में से किसी ने तुम्हें प्रेरित किया है। उन्होने तुम्हें किसी असाध्य कार्य को साधने के लिए उकसाया है। अगर मेरी कल्पना सच हो तो सुन लेना, तुम्हारा यह परिश्रम व्यर्थ प्रमाणित होगा। तुम्हें यह तृप्ति मात्र होगी कि मैने कुछ तो साध लिया है। यह तो अपने आप को वंचित करना है। उदाहरणस्वरूप चंद्रसेन की कहानी सुना-ऊँगा। ध्यान से सुनो। वह और यों कहने लगा।

द्विचक्रपुर का राजा चंद्रसेन शिकार के लिए जंगल गया। वह रास्ता भटक गया। प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था। वह इधर-उधर जब भटक रहा था तब उसने एक आश्रम देखा। प्रदीप नाम का एक मुनि उसमें रहता था। उसने राजा का स्वागत किया और उसकी प्यास बुझायी। उसे आश्रम में आश्रय दिया।

"मेरा नाम चंद्रसेन है। मैं राजा हूँ। आप कौन हैं? इस आश्रम में कब से रह रहे है?" कुतूहलता भरे स्वर में राजा ने मुनि से पूछा।

प्रदीप ने कहा "मैं भी एक राजा था। मेरा नाम प्रदीप है। मेरी प्रजा को चोरों और लुटेरों से किसी प्रकार का भय ना हो, इसके लिए मैने अपराध करनेवालों को कठोर दंड देने का नियम तीव्र रूप से अमल में रखा। अकस्मात मैं बीमार पड़ा। कोई भी वैद्य मेरी चिकित्सा नहीं कर पाया। कोई भी दवा काम नहीं आयी। एक दिन एक महात्मा मुझे देखने आये। उन्होने मुझसे कहा "अपराध के योग्य दंड ना देकर अपराधियों को तुमने बहुत सताया है। उस पाप ही की वजह से तुम रोग-ग्रस्त हुए। जंगल जाओ. तपस्या करो और अपने पापों का प्रायश्चित करो"। कुछ दिनों के बाद अपने भाई को मैने राज्य-भार सौंपा और पत्नी के साथ जंगल चला आया। साल भर तपस्या करने के बाद मेरा रोग थोड़ा कम हुआ। लेकिन फिर से राज्य-भार संभालने की इच्छा मुझमें नहीं रही। राज-सुखों में लत मेरे भाई को मुझपर संदेह हुआ और उसने मेरी हत्या करने के लिए दो सैनिकों को भेजा। वे आये, लेकिन के मुझे मार नहीं पाये। उन्होने सच बात उगल दी। तब से जंगल में जगह-जगह घुमता हुआ एक साल के

पहले ही यहाँ आया। उन सैनिकों ने मेरे भाई से झूठ कह दिया कि क्रूर जंतुओं ने मुझे खा लिया है। उनकी बातों का विश्वास करके वह चुप रह गया। मैं इस जीवन से थक गया हूँ। अधिकार के प्रति मनुष्य के इस मोह को देखते हुए मुझे जीवन से विरक्ति हो गयी है। जिस भाई को मैंने हृदयपूर्वक राज्य-भार सौंपा, वही मुझे मारने पर तुल गया अपने जीवन को सार्थक करने के लिए थोड़े दिनों के बाद मैं हिमालय जाना चाहता हूँ।''

यह सुनकर चंद्रसेन को आश्चर्य हुआ और भय भी। उसने अपना संदेह प्रकट किया ''स्वामी, अपराधियों पर मुझमें प्रतिशोध की भावना नहीं। लेकिन उनको कठोर दंड दिया ना जाए तो आम जनता पर विपत्ति आ सकती है। आप कहिये, इस विषय में मैं क्या करूँ? मेरा क्या कर्तव्य है? मैं भी बीमार होकर राज्य छोड़ दूँगा?''

प्रदीप ने उत्तर दिया ''सब पाप सबको एक समान पीडित नहीं करते। मैने अपने जीवन में अनेकों और पाप भी किये। उनके साथ यह पाप भी जुड़ गया, और मैं इस तरह उन पापों का शिकार बना। तुम डरो मत। तुम्हें एक स्फटिक दूँगा। उसके सहयोग से तुम निर्भीक रह सकते हो।''

चंद्रसेन उस स्फटिक को देखकर चकित रह गया।

स्वामी ने कहा ''उसे हथेली में रखकर न्याय का निर्णय करने पर, वह अपराध के योग्य दंड देते ही पीले रंग में बदल जाता है। दंड मात्रा से अधिक हो तो लाल रंग में और कम हो तो काले रंग में
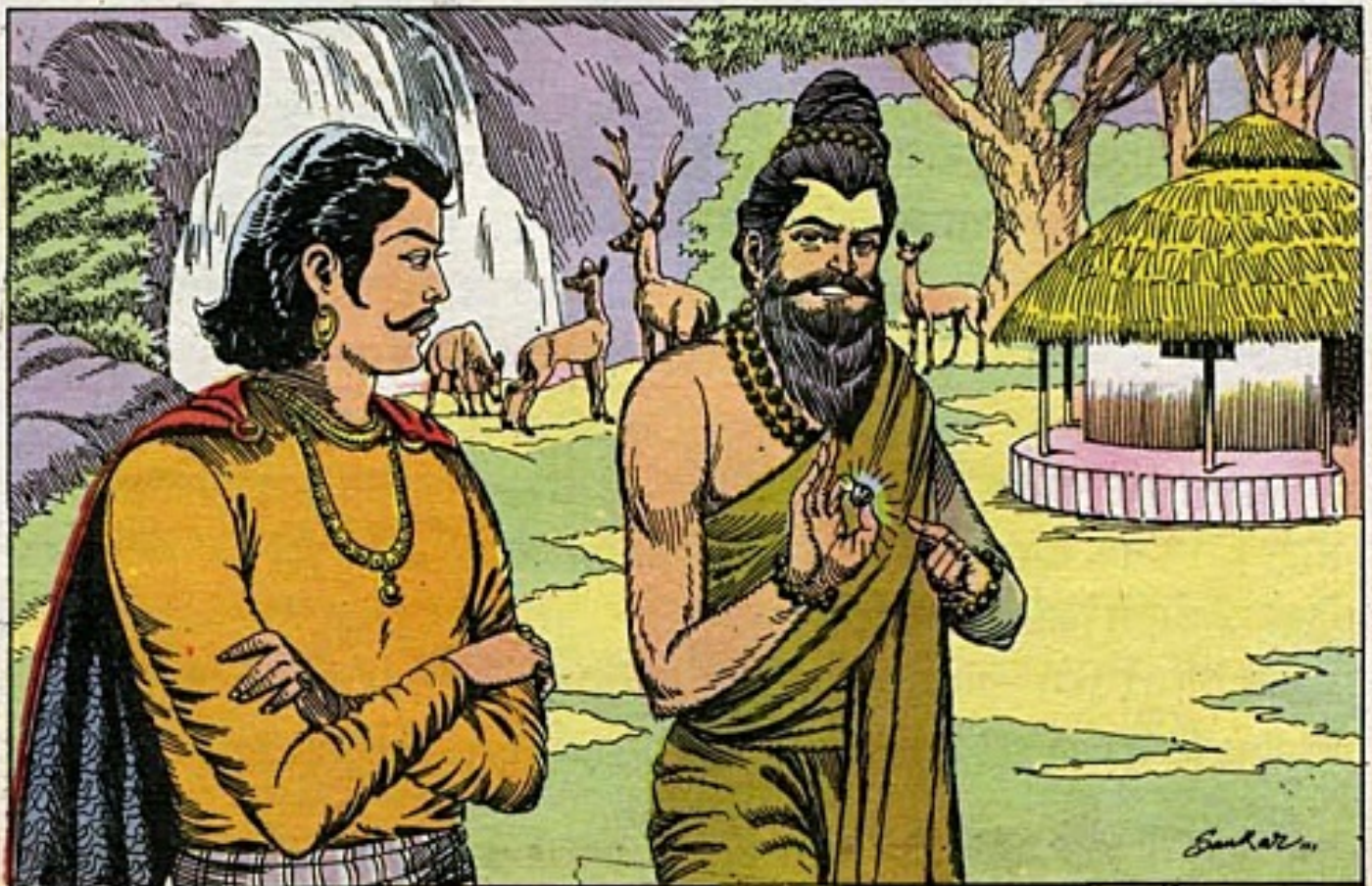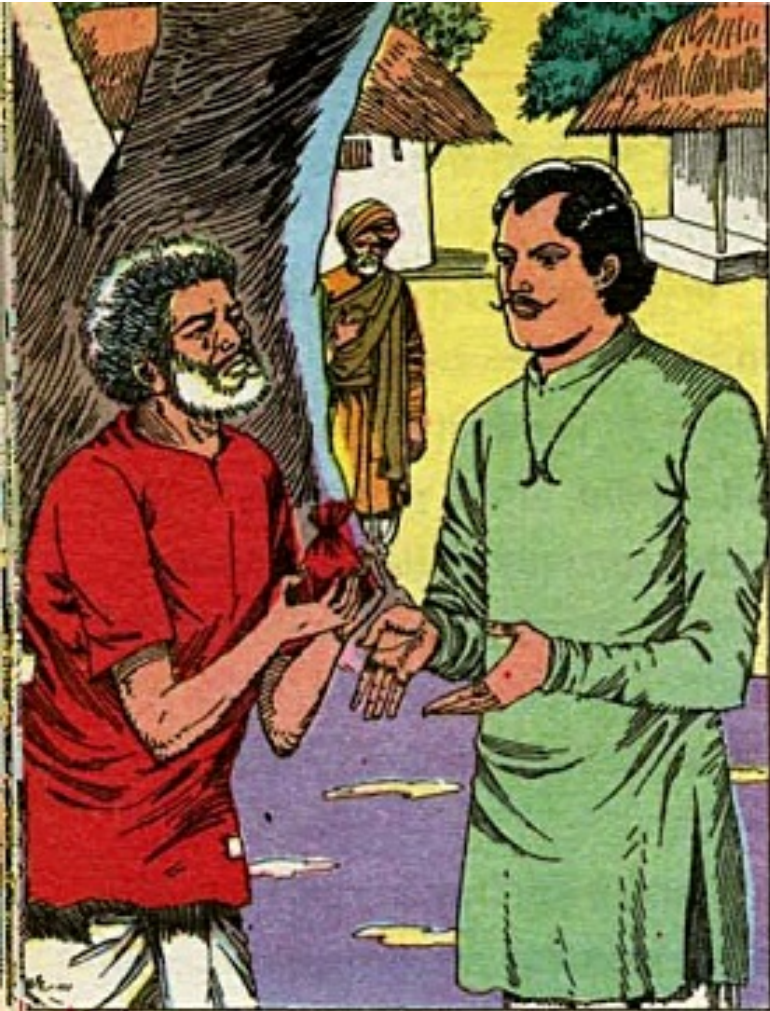
बदल जाता है। पर वह कोई भी निर्णय अपने आप नहीं ले पाता।

इस स्फटिक को मैने अपनी तपोशक्ति से पाया है। हिमालय जाने के पहले मैं इसे किसी राजा के सुपुर्द करना चाहता था। तुम्हारा भाग्य तुम्हें यहाँ ले आया। स्फटिक अपराध के निर्णय में तुम्हें जागरूक करने का काम मात्र करता है। समर्थ न्यायाधीश को नियुक्त करो। शासन ऐसा करो, जिससे पाप तुम्हें ना लगे''।

चंद्रसेन उस स्फटिक को लेकर राजधानी लौटा। अब तक अपराधियों को वही सज़ा सुनाता रहा। इस स्फटिक की प्राप्ति के बाद पाँच न्यायाधीशों को उसने अपने सलाहकारों के रूप में नियुक्त किया। अपराधी से पूछ- ताछ के वाद वह न्यायाधिकरों से उनके अभिप्राय पूछता। उन्हीं को दंड देता था, जिनके अपराध प्रमाणित होने पर स्फटिक काले रंग में बदल जाता था।

वह स्फटिक लाल या काले रंग में परिवर्तित होता था। पीले रंग में वह कभी नहीं बदला। इसलिए राजा को यह मालूम नहीं हो पाता था कि किस अपराध के लिए क्या दंड दिया जाए, और राजा से स्वयं यह हो नहीं पाता था।

स्फटिक के बारे में राजा ने किसी से भी कुछ भी नहीं बताया। किसी की जानकारी के बिना उसने कितने ही लोगों की परीक्षा ली। उनमें से न्याय-शास्त्रज्ञ हैं, पंडित हैं, विविध क्षेत्रों के निपुण हैं। परंतु कोई भी अपने निर्णय से स्फटिक को पीले रंग में बदलने में सफल नहीं हुआ। उसने जान लिया कि अपराध का निर्णय कष्टतर कार्य है।

चंद्रसेन सदा स्फटिक को अपने ही पास रखता था। एक बार बहुरूपिया बनकर शहर में घूमने लगा। एक जगह पर एक विचित्र वृक्ष को देखा। वहाँ ग़रीब-सा दीखनेवाला एक आदमी. धनी-से दीखनेवले एक आदमी को अशर्फ़ियों की थैली दे रहा था। उसे देखकर राजा को संदेह हुआ कि दूसरा आदमी धोख़ेबाज़ है।

राजा फ़ौरन उनके पास गया और पूछा ''तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?''

ग़रीब ने तुरंत कहा ''ये महाज्ञानी हैं। इन्होने मेरी सहायता करने का वादा किया है। इसलिए अपनी सारी कमाई इन्हें दे रहा हूँ''।

"तुम्हें क्या सहायता चाहिये?" राजा ने प्रश्न किया। "महाशय, मेरे चार बेटे हैं। एक साधु एक दिन मेरे यहाँ आये और मुझसे कहा कि तुम्हारे चार पुत्रों में से एक महाज्ञानी बनेगा। उन्होने यह भी कहा कि उसे अच्छी तरह पढ़ाओ-लिखाओ। मैंने उनसे पूछा कि इन चारों में से वह महाज्ञानी बननेवाला कौन है? तो वे केवल यह कहकर चल पड़े कि अग्नि और ज्ञान की बात बताने की होती है? चारों पुत्रों को शिक्षा देने की शक्ति मुझमें नहीं है। इसलिए इस महोदय से यह जानने के लिए सहायता ले रहा हूँ कि उन चारों में से महाज्ञानी कौन है"? ग़रीब ने कहा।

राजा ने उस कपटी महाज्ञानी से ग़रीब को पैसे वापस दिलवाये और कहा "मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा"।

दोनों गरीब की झोंपड़ी में गये। तब वहाँ बहुत शोरगुल मच रहा था।

ग़रीब के चारों बेटों ने मिलकर मिट्टी से एक मूर्ति बनायी। उसमें रंग पोता। उसे सुंदर बनाया। बहुतों ने कहा कि इसे बाज़ार में बेचने पर बहुत धन मिलेगा। इतने में पड़ोसी चंद्र आया और जान-बूझकर उसने उस मूर्ति को तोड़ डाला।

चारों भाइयों ने उसका पीछा किया। उसे खूब पीटा और अपने घर ले आये। उन चारों में बहस हो रही थी कि कैसी सज़ा उसे दी जाए।

राजा को लगा कि यह अच्छा मौक़ा है। साधु के कहे अनुसार अवश्य ही इनमें से कोई महाज्ञानी होगा। उनके फ़ैसले सुनने पर बात साफ़ हो जायेगी।

चंद्रसेन ने स्फटिक तुरंत अपनी हथेली में

लिया और मुट्ठी बंद करके ग़रीब के बड़े लड़के से कहा "अपना निर्णय सुनाओ"।

"सौ कौड़े लगाये जाएँ" बड़े लड़के ने कहा।

राजा ने दखा कि स्फटिक का रंग लाल हो गया है। तब राजा ने दूसरे लड़कों से पूछा।

"उसके पास जितनी भी मूर्तियाँ हैं, तोड़नी हैं" दूसरे ने कहा। तब भी स्फटिक का रंग लाल हुआ।

"उससे ऐसी ही मूर्ति बनवाकर उसे तोड़ ड़ालनी है" तीसरे ने कहा। स्फटिक फ़ौरन काले रंग में बदल गया।
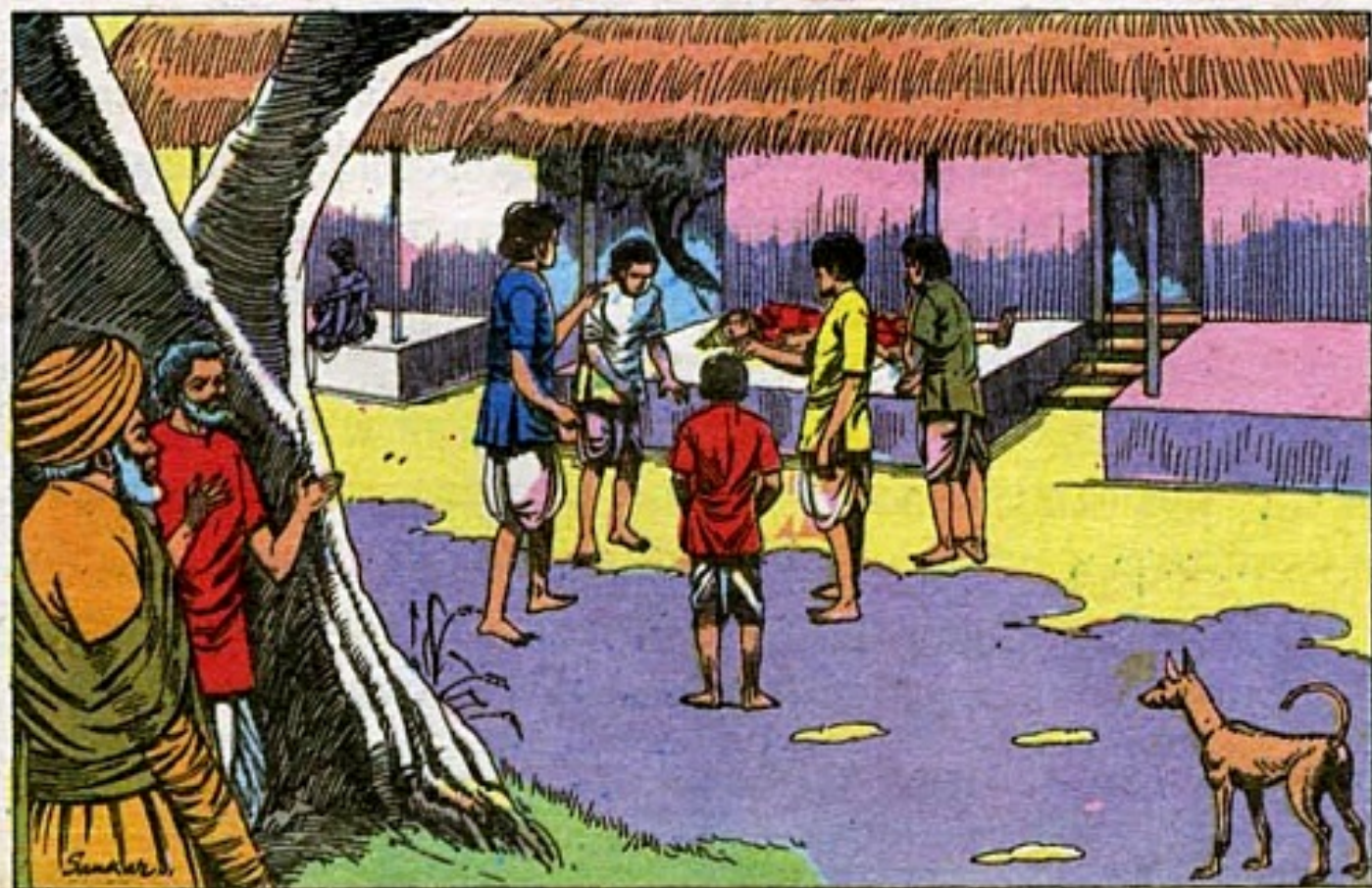
"उसे दंड देने पर हमारी मूर्ति क्या हमें वापस मिलेगी? मेरे पास शक्ति होती तो मैं ऐसा करता कि वह अपनी ग़लती को खुद महसूस करे।" चौथे ने कहा।

आश्चर्य से राजा ने स्फटिक को देखा। अब उसका रंग पीला था। राजा समझ गया कि यह चौथा लड़का ही भविष्य में महाज्ञानी होनेवाला है। उन्होने उनको बताया "मैं राजा हूँ। आपके परिवार को आर्थिक सहायता पहुँचाऊँगा"। उसने महसूस किया कि चौथे लड़के की शिक्षा का प्रबंध करना मेरा कर्तव्य है। उनकी अनुमति लेकर लड़के को अपने साथ ले गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर विक्रमार्क से पूछा "राजन्, ग़रीब के चौथे लड़के के न्याय-निर्णय में स्फटिक का पीले रंग में बदल जाना मैं संयोग समझता हूँ। क्योंकि कोई भी अपराध संबंधी क़ानून ऐसा नहीं हो सकता, जो सब कालों के लिए उपयुक्त हो और जिसके बारे में शक नहीं किया जा सकता हो। क्योंकि समय-समय पर सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन होते रहते हैं, उनके परिणामों का प्रभाव इस कानून पर पड़ता रहता है। ऐस भी देखा गया है कि राज्याधिकार को हस्तगत करनेवाले शासक, अधिकारी अथवा प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए, अपनी रक्षा के लिए, अपने लाभ के लिए उसमें आवश्यक संशोधन करते रहते हैं। इसलिए कोई भी न्याय-निर्णेता, महाज्ञानी तत्कालीन परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर ही न्याय का निर्णय करता है। यह तो जानी और मानी हुई बात है कि किसी काल में जो धर्म माना गया, जो न्याय माना गया, जो नीति

मानी गयी, वह दूसरे काल में अन्याय, अधर्म तथा अनीति माने गये हैं। इससे क्या यह साबित नहीं होता कि स्फटिक का न्याय-निर्णय निरर्थक है? मेरे संदेहों का समाधान जानते हुए भी चुप ही रहे तो तुम्हारा सिर टुकडों में फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''कालानुसार दंड के कानून में परिवर्तन का होना निर्विवाद बात है। राजा चंद्रसेन के सम्मुख जो समस्या उत्पन्न हुई, वह ना तो उनमें परिवर्तन लाने की है या ना ही नवीन कानून बताने की है। उसकी समस्या तो स्पष्ट है। वह इतना ही जानना चाहता है कि अपने शासन-काल में दंड संबंधी जो कानून अमल में ला रहा हूँ, उसके अनुसार मैं अपने निर्णय सुना रहा हूँ या नहीं। अपनी तपोशक्ति से प्राप्त स्फटिक मुनि ने उसे दिया और ऐसा स्फटिक कालातीत है। वह किसी भी सामाजिक परिस्थितियों में निर्णय कर पायेगा कि कौन सा निर्णय न्यायोचित है। हाँ, वह स्वयं न्याय का निर्णय नहीं कर पाता, अतः उसे किसी ज्ञानी की सहायता चाहिये। यह किसी न्यायशास्त्रवेत्ता से होनेवाला काम नहीं है। क्योंकि, कोई भी न्यायशास्त्रज्ञ कितना भी महान क्यों ना हो, उसमें तो व्यक्तिगत इच्छाएँ, आकाँक्षाएँ होंगी ही। उनमें मानसिक, आर्थिक अथवा भावनाओं के वश में आ जाने की भी संभावना है। किन्तु ज्ञानी की बात दूसरी है। वह मनुष्य के स्वाभाविक या विशिष्ट गुणों, उसकी प्रवृत्तियों आदि का भली-भांति परिशीलन कर सकता है। सामाजिक उच्च-निम्न स्तरों को भी वह देख सकता है। इसलिए अपराध संबंधी कानून के अंतर्गत जो स्थिर नियम हैं, उन्हें वह किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं करता। यह वह नहीं मानेगा कि फलाने जुर्म के लिए फलानी सज़ा ही देनी चाहिये। मुनि से प्रदत्त स्फटिक से चंद्रसेन अवश्य ही धर्म की रक्षा कर सकता है, उसका सदुपयोग कर सकता है। अगर तुम समझते हो कि ग़रीब के चौथे लड़के का निर्णय संयोग है, तो यह सरासर तुम्हारी भूल है।''

मौन-भंग होते ही बेताल शव सहित अदृश्य हो गया। (आधार-श्री रामकमल की रचना)

भुलक्कड

लक्ष्मणसेठ सूर्योदय पूर्व स्नान करने निकला। पड़ोस के गाँव के उसके बंधु वीरसेठ रास्ते में उससे मिला और पूछा "सुना कि तुम्हारे घर में घुसकर लगातार तीन बार चोरों ने चोरी की। क्या यह सच है?"

लक्ष्मणसेठ ने दुख प्रकट करते हुए कहा "हाँ, यह सच है।"

"जब कि वे संदूक तोड़ रहे थे तो क्या तुम नहीं जागे? वीरसेठ ने पूछा।

"कैसे जागूँ? मेरे तकिये के नीचे पड़ी चाभियों को उन्होने चुपचाप लिया और संदूक खोली।" लक्ष्मणसेठ ने कहा।

"हमेशा चाभियाँ अपने तकिये के नीचे ही क्यों रखते हो? किसी और जगह पर रख सकते थे।" वीरसेठ ने कहा।

लक्ष्मणसेठ ने दुखी होते हुए कहा "ऐसा भी किया है"।

वीरसेठ ने पूछा "चाभियाँ कहाँ रखी थीं?"

"हमेशा की तरह तकिये के नीचे ना रखकर टाँड पर रखी थी" लक्ष्मणसेठ ने कहा।

वीरसेठ आश्चर्य भरे स्वर में बोला "तब चोरों को चाभियाँ कैसे मिल गयी?"

"मेरे भुलक्कडपन ने मुझे लूट लिया, मुझे बरबाद किया। मैने एक कागज़ पर लिख रखा था कि संदूक की चाभियाँ टाँड पर रखीहैं। मैं कहीं भूल ना जाऊँ, इसीलिए मैने ऐसा लिख रखा था। और वह काग़ज़ मैने अपने तकिये के नीचे रखा। अब वीरसेठ को मालूम हो गया कि चोरी कैसे हुई।

-श्रावणकुमार

चन्दामामा परिशिष्ट-६८

कटहल

फलों में सबसे बड़ा फल है कटहल। यह लगभग ९० से.मी. चौड़ा और ४० सें.मी. मोटा होता है। कटहल को तेलुगु, संस्कृत और मराठी में पनस या फनास कहते हैं। दक्षिण की कुछ भाषाओं में इसे चक्का भी कहते है। ऐसा भी बताया जाता है कि इस चक्का से ही अंग्रेज़ी में इसका नाम 'जाक' पड़ा है।

सुप्रसिद्ध ग्रीक के इतिहासकार थियोप्राटस (ई.पू.३००) ने इसके बारे में कहा है कि भारत से साधुगण इसे बड़े चाव से खाते हैं, यह मिठास से भरा फल है। उन्होने कहा कि बड़े वृक्षों में पैदा होनेवाला यह बड़ा फल है। चौदहवीं शताब्दी के इटली के यात्री मारिगनोह्ली ने बताया कि कटहल के परिमाण की तुलना बकरी के बच्चे से की जाती है।

कटहल का पेड़ सदा हरा होता है। इसकी लंबाई क़रीबन १५ मीटर है। हमारे देश के पश्चिमी खाइयों में ये पेड़ अधिक होते हैं। उत्तरप्रदेश, बिहार तथा आसाम में ये पेड़ कहीं-कहीं दीखते हैं। मुख्यतया साये के लिए इन्हें रोपते हैं। रेतीली भूमि में फलनेवाले फल, पथरीली भूमि में फलनेवाले फलो से बड़े होते हैं।

इसके बड़े-बड़े पत्ते हरे, गोल और चिकने होते हैं। सर्दी के दिनों में फूल इस पेड़ में गुच्छे के गुच्छे होते हैं।

फूल का नुकीलीदार मोटा पत्ता इसकी रक्षा करता है। किन्तु यह जल्दी ही गिर जाता है। फलों से दूर, डालियों के अग्रभाग में तथा तनों में इसके फल होते हैं। फल जब पकने लगते हैं, तब बहुत ही अच्छी सुँगधि आने लगती है। जब ये कोमल होते हैं तब हरे, उसके बाद पीले और खूब फलने के बाद पक्के ऊदे रंग के रूप में परिवर्तित होते हैं। कटहल करीबन २०-३० कि. ग्रा. की वज़न के होते हैं। कटहल के ऊपरी भाग का छिलका मोटा होता है। ऊपर कंटीला होता है। मीठे कटहल के क़ाशों में सफ़ेद बीज होते हैं। कटहल मार्च से जून के अंत तक फलते हैं। ऋतुओं में अगर विलंब हुआ तो सितंबर तक भी ये फल देते हैं। कटहल से तरकारी बताते हैं। यह फल मिठास से भरा हुआ फल है।

कटे कटहल के पेड़ों से खिड़कियाँ, दरवाज़े तथा अलमारियाँ भी बनाये जाते हैं। पीले रंग को इसकी लकड़ी काले रंग में बदलती है। इसको साफ़ करने पर यह चमकते हुए देवदार की लकड़ी जैसी दीखती हैं।

कुरान

इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगंबर मोहम्मद का जन्म ई.स. ५७० में, अरेबिया के मेक्का में हुआ। बचपन में वे व्यापार करते रहते थे। विविध प्रदेशों में ऊँटों पर उन्होने भ्रमण किया। उस अल्पकाल में ही उन्हें मालूम हो गया कि प्रजा तंक संदेश पहुँचाने का महत्तर कार्य भगवान ने उन्हें सौंपा है। उन्हें यह भी लगा कि भविष्य में उन्हें महत्वपूर्ण कार्य करने हैं और वे उन्हीं ही की प्रतीक्षा में हैं। न्यायपूरित धार्मिक जीवन को बिताने के लिए आवश्यक नैतिक सूत्र उन्हें भगवान से प्राप्त हुए। उन्होने जनता के सम्मुख ये सूत्र प्रस्तुत किये। उन सूत्रों का ही उल्लेख उन्होने कुरान में किया।

इस्लाम का अर्थ होता है (भगवान) अधीन रहना। उसका अर्थ शांति से भी है। अर्थात भगवान के अधीन रहकर शांति की प्राप्ति। इस्लाम धर्म में विश्वास रखनेवालों को मुस्लिम था महम्मदीय कहते हैं।

मुस्लिमों का पवित्र ग्रंथ है कुरान। इसका सिद्धांत है कि भगवान एक ही है। वह यह भी मानता है कि भगवान सर्वव्यापी हैं। "पूरब और पश्चिम दिशाएँ भगवान की अपनी हैं। किसी भी मार्ग से होते हुए जाओ, उन तक पहुँच पाओगे। वे सर्वव्यापी और सर्वज्ञ हैं" यह कुरान का प्रबोधन है।

कुरान की प्रथम सूक्ति में ही स्पष्ट किया गया है कि भगवान के अधीन रहना मुख्य है।

नितांत करूणामयी अल्ला के नाम पर
अल्ला की ही विजय होगी। वह सब का अधिपति है।
वह परम करूणानिधान तथा दयासागर है।
न्यायनिर्णय का अधिकारी है।
केवल तुम्हारी ही हम प्रार्थना करते हैं
केवल तुंम्हारी सहायता ही हम चाहते हैं।

kismi TOFFEE BAR PARLE

NAME: ....

SCHOOL: ....

STANDARD: .... DIVN: ....

SUBJECT: ....

हमें सही मार्ग पर चलाओ।

जो तुम्हारे विश्वासपात्र हैं, जो तुम्हारी दया के पात्र हैं, उन्हीं के चले मार्ग पर हमें भी चलाओ। जो तुम्हारी प्रीति के पात्र नहीं हैं, उनके मार्ग पर हमें मत जाने दो।

जो, तुम्हें छोड़कर चले गये है, उनके मार्ग पर हमें जाने मत दो। ज्ञान की प्राप्ति तथा न्याय के लिए ही प्रधानता देता है कुरान। जन्म से लेकर मृत्यु तक ज्ञान की प्राप्ति में ही लगे रहने का उपदेश देता है कुरान।

समकालीन प्रमुख भारतीय विद्वान असघर अली इंजनीयर कहते हैं "संसार का कोई ऐसा धर्म नहीं है, जो द्वेष लड़ाई-झगड़े अथवा दुरभिमान को बढ़ावा देता हो। सच कहा जाए, ऐसी दुर्बलताओं का निर्मूल करने के लिए धर्मो की नितांत आवश्यकता है। हर धर्म अपनी विलक्षण पद्धति में प्रेम, शांति तथा न्याय को बढ़ाने के प्रबल प्रयत्न में सक्रिय रहता है। इस्लाम भी यही करता है। मेका कफट पर, और जिन्होने उसमें सहयोग दिया, उनसे हिंसात्मक प्रतिशोध लेने के संबंध में कुरान में चंद सूक्तियाँ हैं। इन सूक्तियों का उपयोग संदर्भानुसार करना चाहिये। इन सूक्तियों को अन्य सूक्तियों की तरह सदा व्यवहार में लाना नहीं चाहिये।
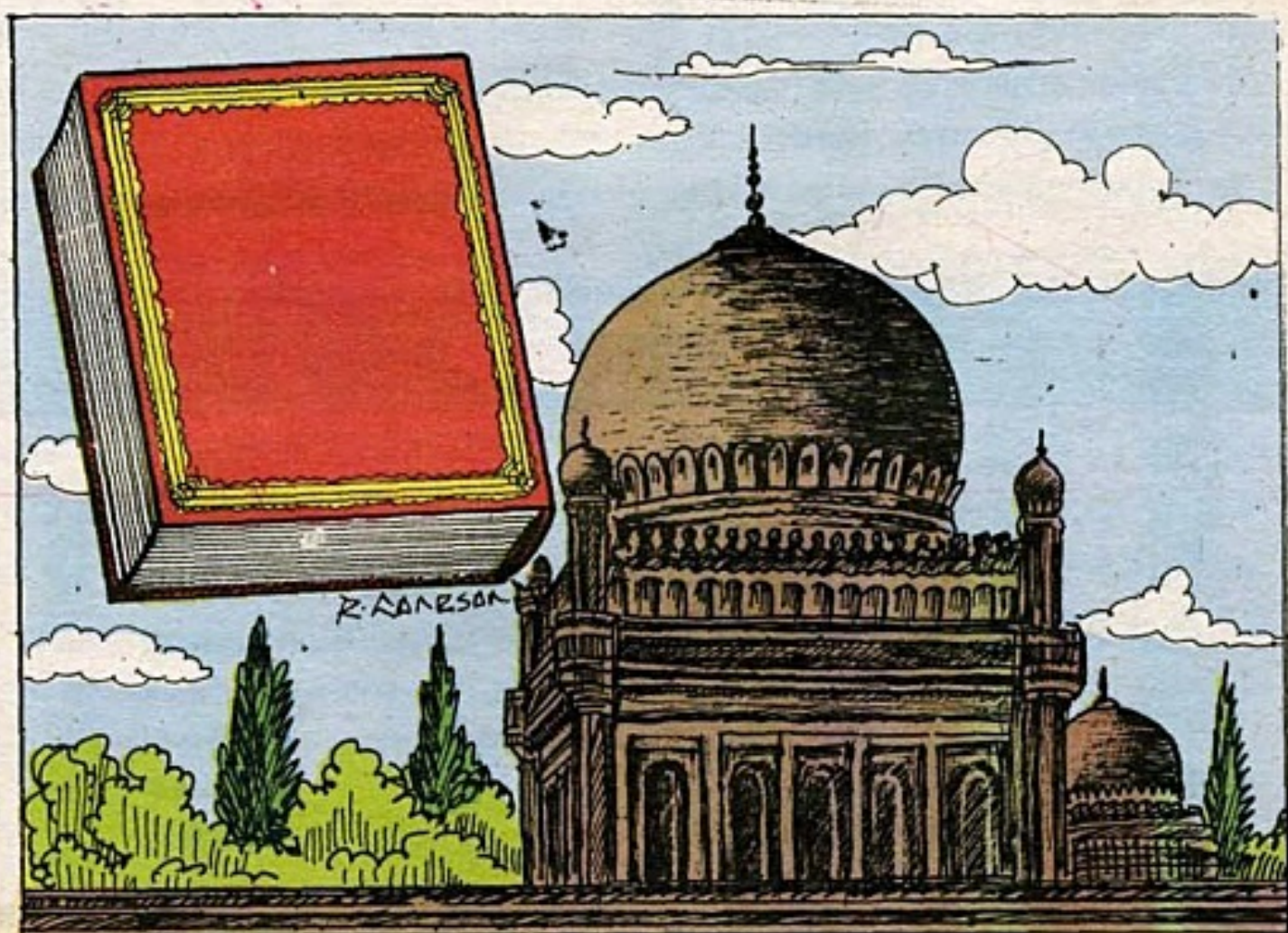
क्या तुम जानते हो?

१. स्वतंत्र केन्या देश के प्रथम प्रधान मंत्री और अध्यक्ष कौन हैं?
२. हमारे देश का सब से बड़ा शहर कौन-सा है?
३. मध्यधरा समुद्र में त्रिभुजाकार में कौन-सा द्वीप स्थित है?
४. इंडोनेशिया में हज़ार द्वीपोंवाले द्वीप के नाम से प्रसिद्ध द्वीप कोन-सा है?
५. संसार में सब से ऊँचा देश कौन-सा है?
६. उस जंतु का क्या नाम है, जिसमें तीन दिल हैं?
७. बर्लिन कुड्य निर्माण और पतन कब हुए?
८. एक अग्रेसिया देश की राजधानी 'अयूध्या' थी। वह देश कौन-सा है?
९. अब्रहाँ लिंकन की पत्नी का क्या नाम है?
१०. किन दंपतियों ने मिल-जुलकर इंग्लैंड पर शासन चलाया। वे कौन थे?
११. संसार का वह नगर कौन-सा है, जिसकी आबादी अत्यधिक है?
१२. वाषिंगटन के पहले अमेरीका की राजधानी क्या थी?
१३. वह जंतु कौन-सा है, जिसके दाँत नहीं हैं।
१४. बार्सिलोना स्पेन का एक शहर है। इसी नाम से दक्षिण अमेरीका में एक शहर है। वह कहाँ है?
१५. आलू की उपज पहले कहाँ होती थी?
१६. टाँजानिया के मान्यारा नेशनल पार्क में अफ्रीका का एक जंतु अधिक संख्या में हैं। वह कौन-सा जंतु है?

उत्तर

१. जोमो केन्याटा
२. कलकत्ता
३. सिसिली
४. बाली
५. स्विज़रलांड
६. 'कटिल षिप' नामक जलचर
७. १९६१ में, १९८९ में
८. मेरी टाड
९. थायलांड (सियां)
१०. तृतीय विलियम, द्वितीय मेरी (१६८०-१६९४)
११. चीन का षौघाय
१२. फिलडेल्फिया
१३. चीँटियों को खानेवाला (यान्टईटर)
१४. वेन्जुला
१५. दक्षिण अमेरीका
१६. हाथी

दानकर्ण भूमिनाथ

वसंतपुर नामक गाँव में भूमिनाथ नामक एक धनी था। उसे दानकर्ण कहते थे। अपना नाम बनाये रखने के लिए उसने कितने ही दान-धर्म किये। इसी ही उसकी पूरी संपत्ति उसके हाथ से चली गयी। वह कृषि-विंद्या में कुशल था, इसलिए दूसरों की खेती करता था। उनमें पैदवार खूब होती थी। इससे अच्छी आमदनी भी होती थी। चैन से वह अपना जीवन-यापन करने लगा, किन्तु दान देने का गुण उससे छूटा नहीं।

एक दिन अपने घर के चबूतरे पर बैठकर पुरोहित से बातें कर रहा था। उस समय वहाँ एक ब्राह्मण आया। भूमिनाथ ने सविनय उसे प्रणाम किया और पूछा कि आप किस काम पर पधारे हैं? क्या मैं कोई सहायता कर सकता हूँ?

ब्राह्मण ने कहा "महाशय, आपके गाँव के रतन सेठ की पुत्री के विवाहोत्सव पर आया हूँ। विवाह के दिन रतन सेठ के कौटुंम्बिक ब्राह्मण पंडितो को पुरस्कार प्रदान करते हैं। मैं वनस्थली नामक गाँव का हूँ, जो यहाँ से दो कोस मील दूर है। उनसे दिये जानेवाले पुरस्कार पाने मैं यहाँ आया हूँ। आप जानते ही हैं कि इस अवसर पर वे चाँदी की थालियाँ देते हैं। वैसे तो थालियाँ मूल्यवान तो हैं नहीं, फिर भी मैं बिन बुलाये आया हूँ। क्योंकि यह रिवाज़ है और रिवाज़ की इज्ज़त करना मेरा धर्म है। किन्तु दुख की बात तो यह है सेठ ने ये थैलियाँ हृदयपूर्वक नहीं दीं। वे उन्हें देते हुए झल्ला रहे थे। उन्हें देखते हुए लग रहा था कि रिवाज़ को बनाये रखने के लिए वे दे रहे हों। थालियों को देने की प्रथा से मुझे विरक्ति हो गयी है। अगर कोई केवल अपना धर्म निभाने के लिए कर रहा हो तो उसे लेने से क्या लाभ। यह तो भीख हुई ना? इसलिए मैं भविष्य में इनके लिए कभी भी नहीं आऊँगा। यहाँ आ गया हूँ, तो सोचा, आप जैसे दानकर्ण का एक बार दर्शन कर लूँ।"
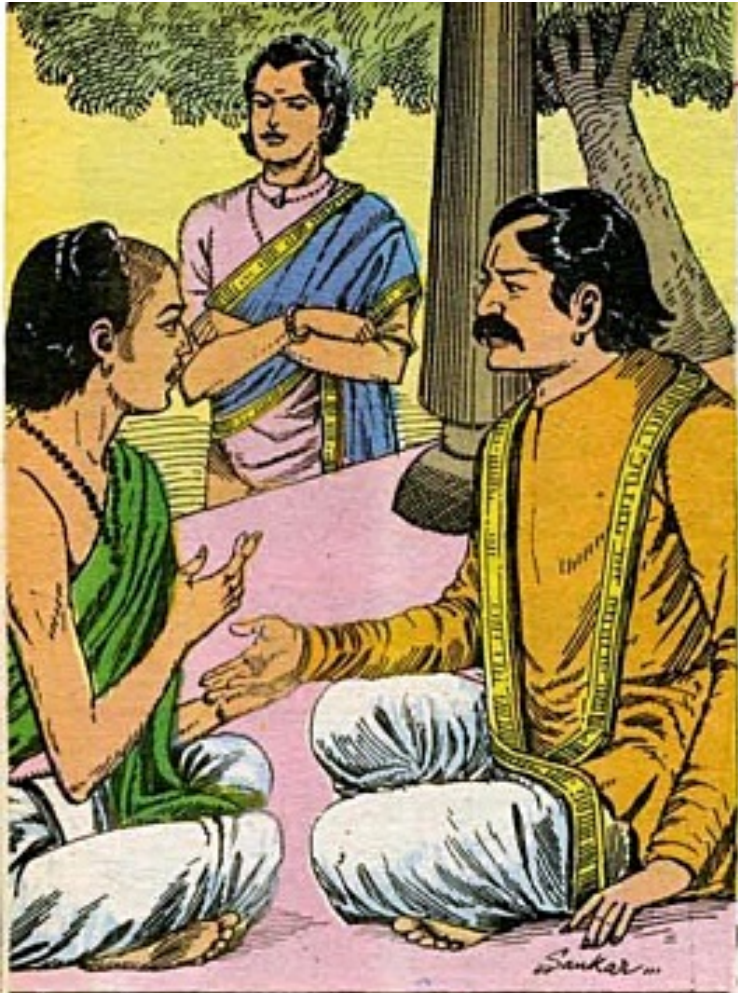
उसकी बातों से भूमिनाथ बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह घर के अंदर गया। ब्राह्मण को दक्षिणा दी और हाथ जोड़कर कहा "थालियाँ दान में देने की प्रथा का मूल्य घट गया है, प्रथा को बनाये रखने के लिए ही अनिच्छापूर्वक ये पुरस्कार दिये जा रहे हैं। अब नाम-मात्र के लिए यह प्रथा शेष है। उसी तरह मैं भी नाम-मात्र का दानकर्ण हूँ। मेरी माताजी की जब मृत्यु हुई, तब मुझे भूदान करना था, पर ऐसा नहीं कर पाया। भूदान की जगह पुरोहित को एक अशर्फ़ी दी और वादा किया कि भविष्य में अवश्य ही भूदान करूँगा। इन परिस्थितियों में आपको भी दान नहीं दे पा रहा हूँ, इसका मुझे बड़ा खेद है। आप मुझे आशीर्वाद दीजिये कि पुरोहित को मैने भूदान करने का जो वचन दिया, उसे निभा सकूँ"।

दक्षिणा लेकर अपने वस्त्रों में सुरक्षित रखते हुए उस पुरोहित ने भूमिनाथ से कहा कि अपनी हथेली फैलाइये। फिर उसने उस हथेली को भली-भांति परखा और आँखे बड़ी करते हुए बोला "महोदय, दान की रेखाएँ आपकी हथेली में स्पष्ट दिख रही हैं। आप जीवन-पर्यंत दान करते रहेंगे। रेखाएँ स्पष्ट बता रही हैं कि आपकी अपनी भूमि होगी। आप अवश्य ही वचन के अनुसार पुरोहित को भूमि-दान करेंगे।"

पुरोहित ने तक्षण ही फिर से बताया "भूमिनाथ जैसे दानकर्ण अपने वचन से नहीं मुकरते। अतः भूमि पाने के बाद अगर मुझे उस भूमि को दान में दे दें तो भी इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। परंतु, मैंने इस भूमि को स्वीकार किया तो याचकवृत्ति पर कलंक लानेवाला सिद्ध हो जाऊँगा"।

कुछ समय बीता। वसंतपुर के समीप ही बहती हुई नदी पर बाँध बाँधा गया। नदी का पानी गाँवों तक पहुँचे, इसके लिए छोटे-छोटे नाले बनाये गये, जिनसे पानी प्रवाहित होता हुआ जाता है। नदी का पूरा पानी नालों में बहने लगा, इस कारण नदी का पानी कम हो गया और जहाँ-जहाँ सूखी ज़मीन थी, वहाँ मिट्टी के टीले खड़े हो गये। एक बार नदी में अधिकाधिक पानी की वजह से बाढ़ आयी और भूमियाँ डूब गयीं।

एक दिन गाँव का पटवारी भूमिनाथ के पास आया और कहा "भूमिनाथ महोदय, आप बड़े

भाग्यशाली हैं। भाग्य का दूसरा नाम है भूमिनाथ। नदी में जो टीले खड़े हो गये, हमारे हिसाब के अनुसार उन सबको नापा। हमने पहचान लिया कि टीले किस-किस के हैं। हमारे पास जो दस्तावेज़ हैं, उनके मुताबिक नदी में डूबे दस एकड़ की ज़मीन आप ही की है।''

भूमिनाथ को लगा कि भाग्य ने फिर से उस पर अपनी कृपादृष्टि फेरा है। वह बहुत ही खुश हुआ। पटवारी को सादर बिठाया और पुरोहित को ख़बर भिजवायी।

पुरोहित आया। भूमिनाथ ने पटवारी से कहा ''पटवारीजी, जब मेरी माँ मरी थीं, बर इन्हे भूमि दान में देने का वचन दिया है। मैं चिंतित था कि मरने के पहले क्या मैं अपने वचन को निभा पाऊँगा। यह भूमि मैरी नहीं, इनकी है। इसे इस पुरोहित के नाम लिख दीजिये''।

भूमिनाथ के इस दान ने पुरोहित को असमंजसता में ड़ाल दिया। उसे वे बातें याद आ गयीं, जो पड़ोस के गाँव के पुरोहित ने उससे कही थीं। अगर वह भूमिनाथ का दान अस्वीकार करे तो उन्हें बहुत दुख होगा। इसलिए पुरोहित ने अच्छी तरह सोच-विचारकर कहा ''इस दान के साथ-साथ एक और दान भी भूमिनाथ को देना पड़ेगा। तभी मैं इस दान को स्वीकार कर सकता हूँ अन्यथा नहीं''।

उसकी बातें सुनकर पटवारी और भूमिनाथ आश्चर्य में डूब गये। मुस्कुराते हुए भूमिनाथ ने पूछा ''बोलिये, दान में क्या देना पड़ेगा?''

पुरोहित ने पटवारी को देखते हुए कहा ''सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि भूमिनाथ दान

देने में ही नहीं, बल्कि कृषि-क्षेत्र में भी सिद्धहस्त हैं। ये भूदान के साथ-साथ श्रम-दान भी करेंगे। प्रकृति के प्रकोप के कारण जब महानदियाँ बाढ़ बनकर बहती हैं तब पहाड़ भी उसके सामने टिक नहीं पाते। उसके सामने इन बाढ़ों की क्या गिनती? हो सकता है, जो भूमि आज पानी से बाहर आ चुकी है, वह कल फिर से डूब जाए''। कहता हुआ वह रुक गया। यह सुनकर भूमिनाथ आश्चर्य से पुरोहित को देखता रहा।

पटवारी ने पुरोहित से पूछा "ठीक है, पर यह तो बताइये कि यह श्रमदान क्या होता है?"

विनयपुर्वक पुरोहित ने सिर झुकाकर भूमिनाथ को देखा और पटवारी से कहा "भूमिनाथ उत्तम कोटि के दानी हैं। जिन्होने जो भी मांगा, उन्हें इन्होने हृदयपूर्वक दिया। ऐसे दानकर्ण पर गंगा माता की कृपा-दृष्टि अवश्य होगी। इसलिए भूलकर भी आप उनके पूर्वजों की दी हुई भूमि का लोखा-जोखा मत कीजिये। भूमिनाथ वह भूमि मुझे दान में देनेवाले हैं। उनसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे उस भूमि में वे खेती-बाड़ी भी करें। मुझे प्रतिफल के रूप में उसमें आमदनी होगी, उसका एक चौथाई हित्सा मात्र दान में दें''।

पटवारी ने पुरोहित की प्रशंसा की और भूमिनाथ से पूछा "आपका क्या निर्णय है?"

"हमारे पुरोहित की बात को भला मैं कैसे टाल सकता है। उनकी इच्छा के अनुसार ही होगा" भूमिनाथ ने तृप्त हो कहा।

फिर उसने जी लगाकर परिश्रम किया। अपने पुरोहित को ज़्यादा से ज़्यादा देने के लिए वह तत्पर रहा। उस भूमि में खेती करके पैदावार बढ़ाकर नाम भी कमाया। अपने दान-गुणों पर किसी प्रकार का धब्बा पड़ने नही दिया।

ब्राह्मण को भूमि मिल भी जाए तो क्या फ़ायदा? क्योंकि वह स्वयं खेती-बाड़ी नहीं कर सकता था। इसलिए उसने ऐसा उपाय सोचा, जिससे उसे बराबर आमदनी मिलती रहे। और भूमिनाथ ने भी ब्राह्मण को भूमि देकर अपना वचन निभाया तथा श्रम-दान करके दानकर्ण का नाम सार्थक किया।

चन्दामामा की ख़बरें

मक्खियाँ या चींटियाँ?

हाल ही में टेक्सास के नागरिकों के लिए चींटियों की झंझट तीव्र समस्या बन गयी। उनका नाश करने के लिए उन्होने अनेकों प्रकार के प्रयत्न किये। परंतु कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उन्होने कीड़े-मकाड़ों के नाश के लिए इस्तेमाल में लायी जानेवाली विषैली दवाओं का भी प्रयोग करके देखा। उन दवाओं का उनपर कोई असर नहीं पड़ा। ऐसी परिस्थिति भी उत्पन्न हो गयी कि कुछ लोगों ने इन चींटियों से तंग आकर अपनी जगह छोड़ कर भाग जाना ही उचित समझा। आख़िर, टेक्सास विश्वविद्यालय के कुछ शास्त्रज्ञों ने ब्राजिल से एक विशिष्ट जाति की मक्खियों को मंगवाया। उन्होने इन मक्खियों को चींटियों पर छोड़ा। ये चींटियों के सिरों पर बैठतीं और अंडे देती थीं। इन अंडों से निकले हुए लार्वा चींटियों के दिमाग़ को खाने लग गये। इससे चींटियों से झंझटे बहुत हद तक कम हो गयीं।

वचनबद्ध

बड़े लोग सदा कहते रहते हैं कि टी.वी.यों की अधिकता के कारण बच्चों में पढ़ाई के प्रति झुकाव कम होता जा रहा है। यह कुछ हद तक सही भी है। अमेरीका में बच्चों की पठनशक्ति को समृद्ध करने के लिए आर.ए.एफ. नामक एक योजना कार्यान्वित की जा रही है। कालिफोर्निया के षेर्लिडिराडो नामक एक प्रधान अध्यापिका ने एक विचित्र पद्धति को अपनाया, जिससे बच्चों में अच्छी पुस्तकों के पठन का अभ्यास हो। उसने अपने विद्यार्थियों को वचन दिया कि अगर वे दो पुस्तकें पूरी की पूरी पढ़ लेंगे तो वह मिट्टी का साँप निगल लेगी। विद्यार्थियों ने भी दृढ़ता से आर.ए.एफ. की योजना के अंतर्गत निर्धारित दोनों पुस्तकें पढ़ लीं। दूसरे ही दिन अध्यापिका ने सब विद्यार्थियों को एक जगह पर इकट्ठा किया और अपने वचन के अनुसार एक गिलास नारंगी रस के साथ-साथ दो मिट्टी के साँप भी निगल लिये।

रामापुर का राम

रामापुर के राम को सीतापुर के सीताराम से काम आ पड़ा। सबेरे-सबेरे ही वह पैदल चल पड़ा। लक्ष्मणपुर पहुँचते-पहुँचते दुपहर हो गयी। उसे बडी भूख लगने लगी। उसने सोचा कि भोजन करने पर ही यह भूख मिटेगी। वह एक खपरैलवाले घर के सामने रुक गया।

उस घर में सब लोग बिल्कुल बहरे थे। राम इस वास्तविकता से अपरिचित था। घर के सामने के चबूतरे पर बैठे हुए पच्चीस साल के युवक से उसने पूछा "बेटे, कड़ी धूप में सफर करके आया हुआ मुसाफ़िर हूँ। ज़रा पता लगाना कि तुम्हारे घर में खाने को खाना मिल सकता है? बड़ा पुण्य होगा।" यह कहकर चबूतरा पोंछते हुए वहाँ बैठ गया।

वह युवक तेज़ी से अंदर गया और विवाह-योग्य अपनी बहन को गाली देता हुआ बोला "कौन है वह? कहाँ से आया है? कहता है, तुमने उससे शादी करने का वादा किया है। अब वह चबूतरे पर आसन लगाये बैठा है। अगर लोगों को इस बात का पता चल जाए तो हमारी नाक कट जाएगी, हमारी बेइज़्ज़ती होगी, इस गाँव में रहना हमारे लिए दूभर हो जायेगा।" आग-बबूला होते हुए वह बोले जा रहा था।

बहन ने भाई की बातों का दूसरा ही मतलब निकाला। क्योंकि वह भी बिल्कुल बहरी थी। क्रोधित नागिन की तरह फुफकारती हुई अपने पिता के पास गयी, जो आँगन में काम पर लगा हुआ था। उसने अपने पिता से कहा "पिताजी, यह कैसा अन्याय है? कैसी नाइन्साफ़ी है? बड़े भैया कहते हैं कि जायदाद में से एक फूटी कौड़ी भी मुझे नहीं मिलेगी; मेरा कोई हिस्सा ही नहीं बनता। हाल ही में ही ज़मींदार ने घोषणा की थी कि पिता की जायदाद में बेटी भी हक़दार है। शायद वह बहरा इस कानून से वाक़िफ नहीं है।

मालूम नहीं, उसने अपने आपको क्या समझ रखा है। लड़की समझकर मुझे शायद अबला और नित्सहाय समझ रहा है। मैं थोड़े ही चुप रहनेवाली हूँ। इस अन्याय के प्रति आवाज़ उठाऊँगी। ज़मींदार से शिकायत करूँगी और कड़ी धूप में, गाँव के बीच के चबूतरे के पास उसे पिटवाऊँगी। अपने बेटे को समझाइये।''

उसके पिता ने काम वहीं का वहीं छोड़ दिया। वेग से निकला और कुएँ से पानी खींचती हुई अपनी पत्नी की पीठ को ज़ोर से मारते हुए कहा ''अरी डायन, अपनी बेटी से यह कहने की तुम्हारी इतनी जुर्रत कि मैं तेरे पिता के लिए खाना नहीं बनाऊँगी और उनसे उपवास करवाऊँगी। क्या तुम समझती हो कि तुम्हारे हाथ से बनाये खाने के लिए मैं तड़प रहा हूँ? छीः तुम्हें तो खाना बनाना आता ही नहीं। तुमसे शादी क्या की, अपने गले में फंदा डाल लिया।'' वह क्रोध से उबला जा रहा था और मुँह से अनाप- शनाप बकता जा रहा था।

उसकी पत्नी ने घड़ाम से रत्सी छोड दी। वह अपने पति की परवाह किये बिना, काली की तरह सीधे सास के पास गयी और बोली ''तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारी बुद्धि क्या कहीं घास चरने गयी है? चालीस साल हो गये, फिर भी उसे सलाह दे रही हो कि वह दूसरी शादी करे। उसे मेरे ख़िलाफ़ भड़का रही हो। कर ले तू, जो चाहे कर ले। परंतु मै भी चुप बैठनेवाली नहीं हूँ। ईंट से ईंट बजाऊँगी। मुझे गूँगी ना समझ। मैं इस गाँव के बड़ों को ही नहीं, नदी के उस पार के गाँव के बड़े लोगों को भी बुलाने की शक्ति रखती हूँ, हिम्मत

है मुझमें। उन्ही के हाथों तुम लोगों को कोड़ों से ऐसा पिटवाऊँगी कि कभी ऐसी बात मुँह से ही नहीं निकालोगी।'' उसके चेहरे तथा हाव-भाव से ऐसा लग रहा था मानों उसपर भूत सवार हो गया हो। बूढ़ी तमतमाती हुई बोली ''अब तुम्हारी असलियत ज़ाहिर हो गयी। आख़िर तुम होती कौन हो, मुझे घर से निकल जाने के लिए कहनेवाली। यह मेरे पति का घर है, अब मैरे बेटे का घर है, कल मेरे पोते का घर होगा। यहीं जीऊँगी, यहीं मरूँगी। यह भी देख लूँगी कि तू मेरा क्या कर सकती है?'' उसने अपना आँचल कमर में ऐसा बाँध लिया मानों लड़ने के लिए मुस्तैद हो गयी हो। एक की बात दूसरे की समझ में नहीं आ रहा था। वे आपस में एक दूसरे को गाली दे रहे थे। ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे। थोड़ी देर बाद सब बाहर आये, ग्रामाधिकारी से मिलने और उससे शिकायत करने, अपनी-अपनी दलीलें पेश करने।

चबूतरे पर बड़ी ही सहनशक्ति से उनके इंतज़ार में बैठा राम उनको देखकर बहुत ही खुश हुआ और बोला ''वाह, आप लोग कितने अच्छे लोग हैं। एक अतिथि का ऐसा आदर ना ही मैने कभी देखा, ना ही सुना। अतिथि को भोजन के लिए बुलाने के लिए एक साथ इतने लोग इकट्ठे आ गये? अपने ग्राम का क्या नाम बताया आपने? मर्यादपुर है ना। यह तो अतिथि-सत्कार के लिए सुप्रसिद्ध गाँव है'' आनंदित होता हुआ वह अपनी जगह से उठा। क्रोध से जलते हुए उस घर के बड़े आदमी ने कहा ''तुम कौन होते हो, हमारे घर के निजी मामलों में दख़ल देनेवाले। जाओ यहाँ से, रास्ता नापो।''

राम उसकी बातें सुनकर हक्का बक्का रह गया। घबराता हुआ बोला ''बाप रे, यह कैसा अन्याय है? एक वक़्त के भोजन के लिए दस रुपये? इतनी बड़ी रक़म? अगर मेरे पास इतनी बड़ी रक़म होती तो मुझे भूख ही नहीं लगती। आपके घर के चबूतरे पर बैठने की नौबत ही नहीं आती''। उसने और विलंब नहीं किया। वह दौड़ पड़ा।

असली बात तो यह है कि रामपुर का राम भी बहरा है, एकदम बहरा है।

महाभारत-१

ऋषिगणों का निवास-स्थल है नैमिशारण्य। शौनक महामुनि उन ऋषियों के कुलपति थे। एक बार उन्होने बारह वर्षो तक सत्रयाग किया। जब अनेकों महाऋषि याग-क्रियाओं में लीन थे तब रोमहर्ष का पुत्र उग्रशवन नामक एक सूत वहाँ आया। कोई ऐसी पुराण-गाथा नहीं, जिसे वह नहीं जानता हो।

सूत को देखते ही सब मुनियों ने उसे घेर लिया और कहा "तुम्हारे आने से हमें बहुत हर्ष हुआ है। तुम कहाँ से आ रहे हो ? तुमसे उत्तम पुण्य-कथाएँ सुन पाएँगे।"

सूत ने उनसे कहा "महर्षियो, परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने बहुत बड़ा सर्पयाग किया है। उस अवधि में वैशंपायन ने जनमेजय को भारत की उत्तम कथाएँ सुनायी हैं। उन कथाओं के रचयिता हैं वैशंपायन के गुरुवर वेदव्यास। मैंने भी बड़े ध्यान से उन कथाओं को सुना है। शमंतक पंचक नाम के पुण्यक्षेत्र का दर्शन भी मैंने किया है, जहाँ युद्ध हुआ। वहाँ से सीधे यहाँ आ रहा हूँ।

उसकी बातें सुनते ही ऋषिगणों के आनंद की सीमा ना रही। उन्होने बहुत ही उत्साह से उससे पूछा कि वेदव्यास रचित महाभारत की कथाएँ सुनाओ।

सूत ने कहना आरंभ किया। उसने कहा "जानते हैं, महाभारत की रचना कैसे हुई? कृष्णद्वैपायन नामक व्यास ने वेदों को चार भागों में विभाजित किया। तदनंतर हिमालय पर्वतों पर उन्होने तपस्या की। धृतराष्ट्र की पीढ़ी की समाप्ति के बाद उन्होने भारत रचने की सोची। वे गंभीर रूप से सोचने लगे कि भारत किस पद्धति से रचा

जाए, जिसे सारा संसार बड़ी ही अभिरुचि के साथ पढ़े। जब वे इस सोच में मग्न थे, तब उन्हें देखने के लिए ब्रह्मा आये। व्यास ने ब्रह्मा को सविनय प्रणाम किया और कहा "देव, मैं वेदवेदांगों के सार को भारत नामक इतिहास ग्रंथ लिपिबद्ध करना चाहता हूँ। किन्तु मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दीख रहा है, जो इसे लिपिबद्ध करे। आप तो जानते ही हैं कि जनता ऐसे ग्रंथ को पढ़ने के लिए कितनी उत्कंठित होगी।"

ब्रह्मा ने उसे परामर्श दिया कि तुम हृदयपूर्वक विघ्नेश्वर की प्रार्थना करो। उससे अपना भारत ग्रंथ लिखवाओ"।

व्यास ने प्रार्थना की। विघ्नेश्वर प्रकट हुए। व्यास कहते गये और विघ्नेश्वर लिखते रहे।

देवलोक में नारद ने, पितृलोक में देवल ने गंधर्व लोक में शुक ने उस ग्रंथ का प्रचार किया। जनमेजय जब सर्पयाग कर रहा था, तब वैशंपायन ने उस ग्रंथ का पठन किया। इस प्रकार भूलोक में उस ग्रंथ का प्रचार हुआ।

शैनक आदि मुनि इन विवरणों को जानकर बहुत ही तृप्त हुए। उन्होने सूत से पूछा कि कौरव और पाँडवों में शमंतकयेचक नामक क्षेत्र में महासंग्राम हुआ। और वह क्षेत्र उस नाम से क्यों पुकारा जाने लगा?

सूत ने तत्संबंधी विवरण देते हुए यों कहा।

त्रेतायुग तथा द्वापर युग के संधिकाल में राजाओं में अहंकार सीमाओं को पार कर चुका था। वे दर्प के नशे में चूर थे। परशुराम ने उन्हें ढूँढ निकालकर इक्कीस बार मार डाला। उनके रक्त से पाँच तालावों की सृष्टि की और पितृ देवताओं को तर्पण दिया। उसके इस तर्पण से पितृदेवता बहुत ही आनंदित हुए। उन्होने परशुराम को वर दिया कि ये पाँचों तालावें पुण्यतीर्थ बनेंगीं। उसी प्रदेश में महाभारत संग्राम हुआ। इस कारण से पाँच क्षेत्रों का शमंतक कुरुक्षेत्र के नाम से पुकारा जाने लगा।

परीक्षित का पुत्र जनमेजय उसी कुरुक्षेत्र में अपने सहोदर श्रुतसेन, उग्रसेन, तथा भीमसेन कीसहायता से सुदीर्घ सर्पयाग कर रहा है। उस समय सरमा नामक देवता शुनक का पुत्र सारमेय यज्ञ-स्थल पर लक्ष्यहीन विचर रहा था। जनमेजय के भाइयों ने उसका पीछा किया और

उसे वहाँ से भगाया। वह अपनी माँ सरमा के पास गया। उससे सारी बातें जानकर सरमा ने उनकी निंदा की और कहा "जो साधुओं और दरिद्रों को पीड़ा पहुँचाते हैं, उन्हें अवश्य ही हानि पहुँचेगी"।

जनमेजय को भय हुआ कि सरमा की यह निंदा कहीं शाप में परिवर्तित ना हो। वह तक्षण हस्तिनापुर लौटा। वह ढूँढ़ने लगा कि शांति का यज्ञ कराने के लिए क्या कोई पुरोहित मिलेगा?

एक बार जब वह अरण्य में आखेट कर रहा था, तब वहाँ उसे श्रृतश्रव का आश्रम दिखायी पड़ा। उसे मालूम हुआ कि श्रृतश्रव का सोमश्रव नामक एक पुत्र भी है। जनमेजय ने श्रृतश्रव से पूछा कि क्या आप अपने पुत्र को पुरोहित बनाकर मेरे साथ भेजने की अनुमति दे सकते हैं?

"मेरे पुत्र का एक व्रत है। वह ब्राह्मण है, उससे जो भी पूछा जाए, वह तक्षण उसे दे देता है। अगर तुम वचन दो कि उसके इस व्रत में कोई विघ्न नहीं आयेगा, उसका भंग नहीं होगा, तो वह पुरोहित बनकर तुम्हारे साथ आयेगा और रहेगा।" श्रृतश्रव ने स्पष्ट किया।

जनमेजय ने अपनी सम्मति दी और सोमश्रव को अपने साथ ले गया। उसकी सहायता से उसने बहुत-से यज्ञ किये।

उदंक नामक एक महर्षि एक दिन जनमेजय के पास आया। उसने कहा "राजन्, जो कार्य तुमको करना था, नहीं किया। हाथ बाँधे व्यर्थ बैठे हो। अपने कर्तव्य की उपेक्षा नितांत अपराध है"।

"स्वामी, क्षत्रिय धर्म का आचरण अवश्य ही कर रहा हूँ। कौन-सा वह कार्य है, जो बिना किये चुप बैठा हूँ।" जनमेजय ने उदंक से बड़े विनय से अपना संदेह प्रकट किया।

"सर्पयाग करो। उस दुष्ट तक्षक को भस्म कर दो। स्मरण नहीं, तुम्हारे पिता परीक्षित को डसकर मार डालनेवाला दुष्ट वही है। काश्यप जब तुम्हारे पिता के प्राणों की रक्षा के लिए भागा-भागा आ रहा था, तब उसी दुष्ट ने उसे अपार धन दिया, अनेकों प्रलोभन दिये और उसे वापस भेज दिया। क्या ऐसे दुष्ट तक्षक को मार डालना तुम्हारा कर्तव्य नहीं? इससे बढ़कर क्षत्रिय-धर्म और क्या हो सकता है? उसे मारकर अपना पितृ-धर्म निभाओ और ऋण चुकावो।"

सच कहा जाए तो उदंक भी तक्षक से प्रतिशोध लेना चाहता है। उसका कारण यों है।

इस उदंक ने वेद नामक ऋषि के यहाँ शिक्षा पायी। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के पहले उसने अपने गुरु से पूछा था कि गुरुदक्षिणा के रूप में मैं क्या दूँ?

वेद ने कहा "मेरी धर्मपत्नी से पूछो कि वह क्या चाहती है?" उदंक ने गुरु की धर्मपत्नी से पूछा "आप क्या चाहती हैं?"

"आज से चौथे दिन के बाद मैं पुण्यव्रत करने जा रही हूँ। तब कुँडलियाँ पहनने की मेरी इच्छा है। वे राजा की पत्नी के पास हैं। अगर तुमसे हो सके तो उन्हें ले आना"।

उदंक पौष्यराजा की पत्नी पास गया और बात बतायी। उसने अपनी कुँडलियों को देने की स्वीकृति दी। लेकिन उसने यह कहकर उसे सावधान किया कि तक्षक उन्हें चुराने की ताक़ में है।

वही हुआ, जो उसने उदंक से कहा था। जब वह कुँडलियाँ लेकर जंगल के मार्ग से जाने लगा तो राह में उसने एक तालाब देखी। उसने कुँडसियों को एक जगह पर रख दिया और जब वह तालाव के पास गया, तब तक्षक ने उन कुँडलियों की चोरी की और वह भागने लगा। किसी भी प्रकार इन कुँडलियों की चोरी करने के लिए वह उदंक का छिपे-छिपे पीछा कर रहा था।

नग्न मानव-रूप में भागते हुए तक्षक को उदंक ने पकड़ लिया। तक्षण ही तक्षक साँप बन गया और एक बिल में घुस गया। उदंक ने एक लकड़ी ली और उस बिल को खोदता गया। खोदते-खोदते उस मार्ग से वह पाताल पहुँचा।

उदंक ने वहाँ के नागों की सहायता माँगी; उनसे प्रार्थना की। किन्तु उनपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आख़िर उसने एक मनुष्य को देखा, जो घोड़े पर सवार था। वह अश्व था अग्नि और उसपर सवार व्यक्ति था इंद्र। इस सत्य से उदंक अवगत नहीं था। उस मनुष्य ने जब उदंक से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिये, तो उदंक ने कहा कि नागलोक को मेरे अधीन कीजिये। उसके ऐसा बोलते ही उस अश्व से भयंकर अग्नि की ज्वालाएँ निकलीं। तक्षक भयभीत हो गया और उसे लगा कि ये ज्वालाएँ संपूर्ण नागलोक को भस्म कर

देंगी; नागलोक का अस्तित्व मिट जायेगा। उसने कुंडलियाँ उदंक को दे दीं। उदंक उन कुंडलियों को लेकर लौटा और निश्चित अवधि के अंदर उन्हें गुरुपत्नी को सौंपा।

उदंक ने जनमेजय को जब बताया कि आपके पिता को मार डालनेवाला तक्षक है तो उसने अपने मंत्रियों को बुलाया और पूछा कि यह सब कुछ किस कारण से हुआ है?

उन्होने जनमेजय के पिता परीक्षित की मृत्यु का कारण यों बताया।

आप तो जानते ही हैं कि कौरवों और पाँडवों में महासंग्राम हुआ। श्रीकृष्ण पांडवों के पक्ष में थे। उन्हीं के मार्गदर्शन में पाँडव कौरव सेनाओं के छक्के छुड़ा रहे थे। कौरवों ने भी अपनी हार नहीं मानी। भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि श्रेष्ठ वीर-शूर उनके साथ थे। कर्ण के पराक्रम पर उन्हें संपूर्ण विश्वास था। दुर्योधन भी दृढ़ता से पाँडवों का सामना कर रहा था, लेकिन अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु उनके लिए सिंह-स्वप्न बन गया। उसको देखते ही कौरव-सेना निर्वीर्य हो रही थी। दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, द्रोणाचार्य आदि पराक्रमी भी उसके निकट जाने से ड़र रहे थे। उन सबने मिलकर षड्यंत्र रचा।

उन्होंने चक्रव्यूह रचा, जिसमें अभिमन्यु को फँसाया जाए। अभिमन्यु को चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करने का मार्ग मालूम था, लेकिन उससे निकल आने के उपाय से वह अपरिचित था। यों अभिमन्यु महाभारत-युद्ध में छल से मारा गया। परीक्षित अभिमन्यु व उत्तरा के पुत्र हैं। उन्होंने कृपाचार्य के पास धनुर्विद्या सीखी। पाँडवों के
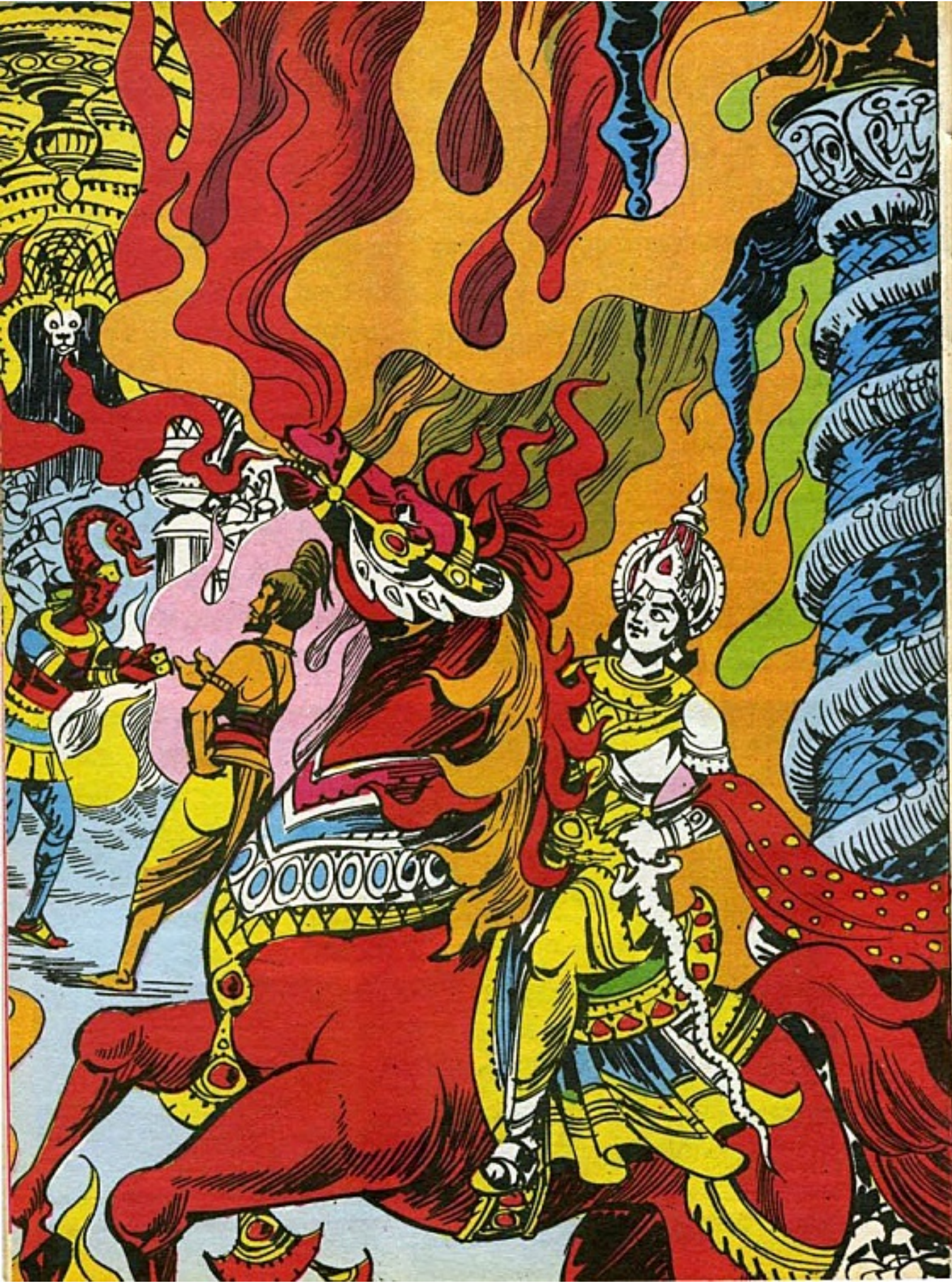
उपरांत वे राज्य-पालन करने लगे। उन्हें आखेट बहुत ही पसंद था। एख बार वे एक जंतु का पीछा कर रहे थे। जब वह जंतु आँखों से ओझल हो गया तो तपस्या में लीन महामुनि शमीक के पास आये और उनसे पूछा कि बाण से घायल एक मृग बचकर इधर से भागा है। क्या आपने उस जंतु को देखा?

तपस्या में लीन शमीक ने उनके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। परीक्षित क्रोधित हुए। उन्होने मरे हुए एक साँप को अपने बाण से उठाया। उसे शमीक के गले में डालकर चला गया।

शमीक के पुत्र श्रृंगि को परीक्षित की गयी इस अप्रिय घटना के बारे में अपने एक मित्र के द्वारा मालूम हुआ। श्रृंगी बहुत क्रोधी स्वभाव का था। उसने शाप दिया "आज से सातवें दिन परीक्षित की मृत्यु तक्षक के डसने से होगी"।

शमीक को जब ज्ञात हुआ कि परीक्षित जैसे अच्छे शासक को उसके पुत्र ने ऐसा कठोर शाप दिया तो उन्हें बहुत दुख हुआ। गौरवमुख नामक अपने शिष्य को उन्होने बुलाया और उससे कहा "तुम परीक्षित के पास तक्षण जाओ और मेरे पुत्र के दिये हुए शाप संबंधी पूरा विवरण दो। उससे कहो कि इस शाप से अपनी रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध कर ले"। गौरवमुख परीक्षित के पास गया और अपने गुरु की बातें सुनायी।

परीक्षित अपने किये पर बहुत ही पछताये, लज्जित हुए। उनमें श्रृंगि के शाप से भय उत्पन्न हो गया और उन्होने अपने मंत्रियों को बुलाकर कहा कि इस शाप से रक्षा के लिए कोई उपाय सोचिये। उन्होने एक ही स्तंभ पर एक भवन खड़ा किया। उसमें हवा भी नहीं जा सकती। भवन-भर में ऐसे औषध रखवा दिये, जिनसे विष का प्रभाव नहीं हो सकता। विष-वैद्यों तथा मांत्रिकों को बुलाया। सारे के सारे मंत्री राजा के साथ उसी भवन में रहने लगे।

छह दिन तक कुछ भी नहीं हुआ। काश्यप नामक एक ब्राह्मण को राजा पर आयी विपदा के बारे में मालूम हुआ। वह तक्षक से राजा के प्राण की रक्षा के लिए कटिबद्ध होकर निकल पड़ा। तक्षक भी दीर्घ सोच में पड़ गया कि राजा को डसने का मार्ग क्या है? रास्ते में संयोगवश ब्राह्मण वेष में काश्यप से वह मिला। बड़ी चतुरता से वह

जान गया कि काश्यप किस काम पर जा रहा है।

काश्यप ने तक्षक से कहा "साँप के डसने से किसी भी प्राणी को बचाने की कला मैं जानता हूँ। विषैले साँप के डसने से जो मरते हैं, उनको अपनी मंत्र-शक्ति से मैं बचा सकता हूँ। उनमें पुन: प्राण फूँक सकता हूँ। तक्षक परीक्षित महाराज को डसे तो मैं उन्हें प्राण-दान दूँगा। इससे मुझे अपार धन मिलेगा और कीर्ति भी।"

"मैं तक्षक हूँ। मैं डसूँ तो कोई भी भस्म बन जायेगा। तुम्हारे मंत्र निष्फल हो जाएँगे। अच्छा यही होगा कि तुम लौट जाओ"।

काश्यप ने उसकी बात नहीं मानी। वह अपने दृढ़ निश्चय पर डटा रहा। तब तक्षक ने अपनी शक्ति दिखाकर उसे निराश कर देने के लिए समीप ही के एक बरगद के पेड़ को डस लिया। वह देखते-देखते भस्म हो गया। काश्यप ने तक्षण ही अपनी मंत्र-शक्ति से उसे जैसे के तैसे खड़ा कर दिया।

"मेरे विष को तुम शायद निष्फल कर सकते हो किन्तु मुनिकुमार के शाप को निष्फल करना तुम्हारे बस की बात नहीं है। राजा जो धन देंगे, उससे अधिक धन मैं दूँगा। इसे लो और लौट जाओ"। तक्षक ने अपार धन काश्यप को दिया और उसे वापस भेजने मे कृतकृत्य हुआ।

इसके बाद तक्षक ने कुछ नागों को मुनिपुत्रों के रूप में परीक्षित के भवन में भेजा।

वे फल-पुष्पों को लिये परीक्षित के पास आये। उन्होने जो फल दिये, उनमें से एक फल को राजा ने तोड़ा। उसमें उनको एख छोटा-सा कीड़ा दिखाई पड़ा।

परीक्षित ने घिरे हुए अपने मंत्रियों से कहा "शाप की अवधि समाप्त होनेवाली है। सुर्यास्त होनेवाला है। हो सकता है, यह कीड़ा मुझे काटे, परंतु सर्प के डसने का कोई भय नहीं।" देखते-देखते वह कीडा सर्प बना। सर्प तक्षक ही था। उसने राजा को डस लिया। सब लोग भयभीत होकर छिन्नाभिन्न हो गये।

तक्षक के डसने से केवल परीक्षित ही भस्म नहीं हुए बल्कि एक स्तंभ पर खड़ा वह भवन भी भस्मीभूत हो गया।
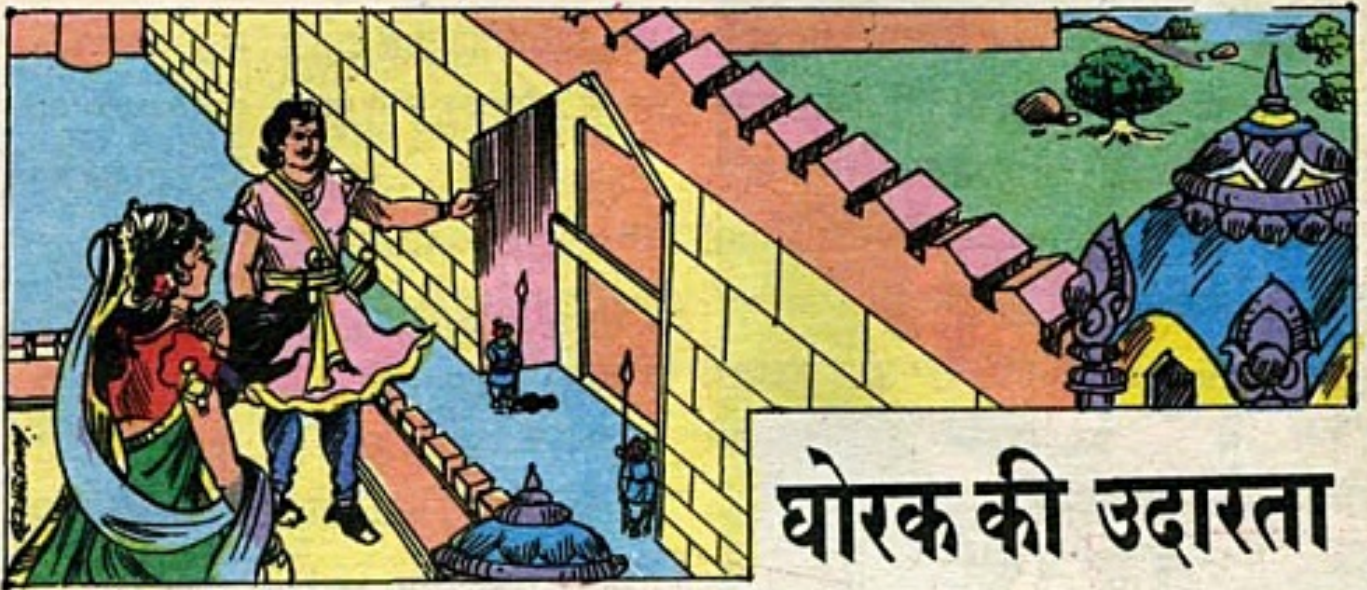
घोरक की उदारता

त्रिरूप देश की राजकुमारी चंद्रमती अद्भुत सुंदरी थी। एक बार वह विचित्रताओं तथा विशेषताओं के देखने लिए विरूप देश गयी। उस देश के युवराज वीरसेन ने उसका स्वागत-सत्कार किया। वह उसको अपने साथ ले गया और उस देशकी विचित्रताओं तथा आकर्षक प्रदेशोंको दिखाया। इस अवधि में उन दोनों में प्रेम अंकुरित हुआ।

चंद्रमती थोड़े दिनों के बाद स्वदेश लौटी। इसके कुछ दिनों के बाद उसके पिता से अपनी पुत्री के स्वयंवर पर उपस्थित होने के लिए वीरसेन को मिला आह्वान-पत्र। जब वह स्वयंवर पर जाने की तैयारियाँ करने लगा, तब एक विपत्ति आ पड़ी।

घोरक बलशाली राक्षस था, मांत्रिक था। वह एक घने जंगल में रहता था। उस जंगल में प्रवेश करनेवाले की जान की ख़ैर नहीं थी। उसका जीवित लौटना असंभव था। उस राक्षस ने चंद्रमती का अपहरण किया और वह उसे उस घने जंगल में ले गया। त्रिरूप का राजा अपनी पुत्री के अपहरण से दुखी हो गया; अस्वस्थ हो गया; अपनी असमर्थता पर दुखी हो गया।

वीरसेन सोच भी नहीं सकता था कि घोरक जैसे बलशाली राक्षस से लड़ सकूँगा। परंतु अब परिस्थिति ही कुछ भिन्न थी। चूँकि चंद्रमती को वह बेहद चाहने लगा, और और उसके विना अपने जीवन को निरर्थक मानने लगा, उसने मुक़ाबला करने की ठानी। माता-पिता के मना करते हुए भी वह घने जंगल की ओर बढ़ा। वहाँ उसकी मुलाक़ात कुछ राजकुमारों से हुई।

वे राजकुमार भी चंद्रमती को उस राक्षस के पंजे से छुड़ाने के लिए वहाँ आये हुए थे। जब उन सबने जंगल में क़दम रखा तो राक्षस घोरक ने अपने मंत्र बल से उन सबको चिपकलियों, मेंढकों

रामेश्वर

और बगुलों के रूप में बदल दिया और उनसे कहा "यहाँ से तुरंत निकलकर इस जंगल से जा पाओगे तो तुम यथावत् अपने रूप पाओगे। नहीं तो, तुम लोगों की आयु अपने रूपों के अनुरूप घट जायेगी। हर क्षण प्राण-भयसे कंपित रहने लगोगे। दुख और पीड़ा से तुम लोगों के प्राण छटपटाने लगेंगे"।

वे तुरंत जंगल से निकल पड़े। कुछ लोगों को साँपों ने खा लिया। तो कुछ और लोग जंगली जानवरों के पैरों के तले दब गये। कुछ और राजकुमार जंगली आदमियों के जाल में फँस गये। जो बच गये और जंगल से बाहर आ पाये, वे असली रूप पाने में सफल हुए। ऐसे राजकुमार एक वर्ष तक जंगल के प्रवेश-द्वार के ही पास रहे। क्योंकि राक्षस की आज्ञा थी कि वे वहाँ रहकर जंगल के अंदर आने का दुत्साहस करनेवाले राजकुमारों को रोकें और उन्हें सावधान करें।

उन्होने वीरसेन से बताया "इस भूमि पर घोरक का सामना करने की शक्ति किसी में नहीं है। ज़िन्दा रहें, यही बहुत है। अच्छा यही है कि चंद्रमती को भूल जाओ और लौटो"।

वीरसेन ने उनसे कहा "तुम लोगों में और मुझमें मुख्यतया एक भेद है। तुम लोगों का समझना है कि ज़िन्दा रहें, यही बहुत है। लेकिन चंद्रमती के बिना मेरा कोई जीवन ही नहीं। मै ज़िन्दा रहना भी नहीं चाहता, इसलिए मैं चंद्रमती को पाने के लिए घोरक के पास जाकर ही रहूँगा। कोई भी मेरा रास्ता रोक नहीं सकता"। वह आगे बढ़ा और उसने जंगल में प्रवेश किया।

वह जंगल आकाश को छूनेवाले पेड़ों और काँटों के झाड़ों से भरा हुआ था। लेकिन वीरसेन को बहुत दूर तक जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसे लगा कि किसी ने पीछे से आकर उसकी आँखें बंद कर दीं। वीरसेन ने बहुत कोशिश की। जब उसकी आँखों का पर्दा हट गया तो उसने देखा कि एक दृढ़ शरीरवाला कोई सामने खड़ा है। उसकी आँखें आग बरसा रही थीं। केश काँटों के झुंड-से लग रहे थे।

उस दृढ़काय ने कहा "मेरा नाम घोरक है। अरण्य के बाहर राजकुमारों ने तुम्हें सावधान किया होगा। फिर भी, तुमने अंदर आने का

साहस किया। तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है। क्या मुझे मार डालने की हिम्मत रखते हो?'' वह हँसने लगा।

वीरसेन उसकी इस धमकी से विचलित नहीं हुआ। उसने धैर्य से कहा ''मै तुम्हें मारने नहीं आया हूँ। चंद्रमती से मैने प्रेम किया है और उसे बचाने आया हूँ''।

''तुम्हारा प्रेम तुम्हारे प्राणों को हर लेगा। चुपचाप यहाँ से चलते बनो। मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा'' राक्षस ने आश्वासन देते हुए कहा।

''मुझे चंद्रमती चाहिये। उसके बिना मुझे यह जीवन नहीं चाहिये'' दृढ़ स्वर में वीरसेन ने कहा। घोरक प्रशंसा-भरी दृष्टि से देखता हुआ उससे बोला ''अगर तुम्हारा यही निश्चय हो तो एक उपाय बताता हूँ, जिससे चंद्रमती तुम्हें मिल सकेगी। उसे पाने के लिए तुम्हें आग में उबलते हुए पानी में नहाना होगा। तुम सोच लो कि इसके लिए तुम सन्नद्ध हो या नहीं। अगर नहीं तो मैं तुम्हें मेंढक के रूप में बदल दूँगा। कोई साँप तुम्हें निगल ना जाए, इसके पहले ही तुम्हें जंगल से भागकर अपनी जान बचानी होगी। तभी तुम निजी स्वरूप पा पाओगे''।

''मै उबलते हुए पानी में नहाऊँगा'' वीरसेन ने कहा।

घोरक ने उसे अपनी हथेली में लिया और चल पड़ा। एक जगह बृहत आकार का एक चूल्हा जल रहा था। उसपर ताँबे का एक बड़ी हाँड़ी रसी हुई थी। उसमें जो तेल था, उससे गरम भाप निकल रही थी। घोरक वीरसेन को उसके पास ले गया। वीरसेन ने उबलते हुए उस तेल को देखा।

और वीरसेन अपने निजी रूप में वहाँ खड़ा हो गया।

घोरक ने संतृप्त हो अपना सिर हिलाते हुए कहा "तुम अब भी जीवित हो। किन्तु तीन दिनों तक ऐसा घोर स्नान तुम्हें करते रहना पड़ेगा, तभी चंद्रमती को पाने का उपाय तुम्हें बताऊँगा। यह जोख़िम उठाने के लिए तुम तैयार हो तो बोलो। अब भी समय है। मेंढ़क बनकर निकल जाने का मौक़ा देता हूँ"।

"मुझे हर हालत में चंद्रमती चाहिये। मुझे वह उपाय बताओ" वीरसेन ने बिना हिचकिचाये कहा।

घोरक ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा "राजकुमार, आज तक किसी भी राजकुमार ने ऐसा साहस नहीं किया। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि आख़िर यह प्रेम है क्या, जिसके लिए तुम अपने प्राणों की भी परवाह नहीं कर रहे हो। वह अवश्य ही उत्तम ही होगा। ठीक है, चंद्रमती को पाने का उपाय तुम्हें बताने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो।

"एक और बार अच्छी तरह सोच लो। क्या तुम यह साहस कर पाओगे? या मेंढक बनकर लौट जाना पसंद करोगे?" घोरक ने पूछा।

"मैं पहले ही कह चुका हूँ। अपने निर्णय से मैं पीछे नहीं हटूँगा।" दृढ स्वर में वीरसेन ने निधड़क कहा।

तुरंत घोरक ने उसे हाँड़ी में ड़ाल दिया। बस, उसका सारा शरीर जलने लगा। उसे बहुत ही पीड़ा होने लगी। वह एकदम जोर से चिल्ला पड़ा।

घोरक ने निश्चिंत उस हाँड़ी में झुककर देखा। देखा कि वीरसेन उस हाँड़ी में भिंडी की तरह डुबकियाँ लग रहा है और थोडी देर बार निर्जीव होकर ऊपर आया। तब घोरक ने किसी मंत्र का उच्चार किया। फ़ौरन वह हाँड़ी ग़ायब हो गयी

इस जंगल में दूसरी जगह घोरकी नामक एक राक्षसी है। बल-पराक्रम तथा शक्ति में वह मेरे बराबर की हैं। उसके पास अद्भुत कुँकुम है। उसे मुझे लाकर दोगे तो चंद्रमती को छोड़ दूँगा।"

"उस कुँकुम की विशेषता क्या है? तुमसे जो काम नहीं हो पाया, वह काम में क्या कर सकूँगा" वीरसेन ने पूछा।

"तो सुनो" घोरसेन ने एक क्षण रुककर

कहा "मेरे पास एक अद्भुत डिबिया है। उसमें वह कुँकुम भर दूँ और अपने पास रख लूँ तो संसार की कोई भी शक्ति मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकती। आख़िर घोरकी को भी मेरे सामने सर झुकाना पड़ेगा, मेरी हर बात माननी पड़ेगी। घोरकी से उस कुँकुम को पाना कोई आसान बात नहीं है। उसके निवास में प्रवेश करना ही असाध्य कार्य है। उबलते हुए पानी में जिसने पीड़ा सही या सह पाये, वही घोरकी के निवास में पहुँच सकता है। मै स्वयं ही यह साहस नहीं कर पाया। उबलते हुए पानी में स्नान करने की हिम्मत मुझमें है नहीं। ऐसा कोई साहसी , शक्तिवान तथा समर्थ मानव चंद्रमती को छुड़ाने के लिए शायद आये, इसी आशा में मैने उसका अपहरण किया था। अब बताओ, घोरकी के निवास में प्रवेश करने का साहस करोगे? मुझे कुँकुम लाकर दे पाओगे?"

वीरसेन ने कहा "अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करूँगा"।

"घोरकी रात के समय अपने शयनागार में मानव-रूप में सोती है। उस समय मैं तुम्हें वहाँ पहुँचाऊँगा। मैं तुम्हें जो जड़ी बूटी दूँगा, उसे उसके माथे पर रखो। इससे उसके प्राण-पखेरू उड़ जाएँगे। कुँकुम उसके सिरहाने तकिये के नीचे पाओगे।" घोरक ने कहा।

घोरक की दी हुई जड़ी को वीरसेन ने अपने वस्त्रों में छिपा लिया। उसके बाद घोरक के कहे अनुसार उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। क्षण के बार जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो अपने को एक विचित्र पलंग के बग़ल में पाया। उसपर एक

साधारण सुंदर स्त्री मस्त सो रही है। वीरसेन समझ गया कि यही घोरकी है।

उसे जड़ी का स्मरण आया, जिसे उसने अपने वस्त्रों में छिपा रखा था। अनावश्यक ही घोरकी को मार डालने की उसकी इच्छा नहीं हुई; उसके दिल ने नहीं माना। क्षण भर वह सोचता रहा और आख़िर उसने उसके पाँवों को छूकर उसे जगाया।

हुँकार भरती हुई घोरकी उठी और बोली "कौन हो तुम? जहाँ हवा भी झाँक नहीं सकती, वहाँ, मेरे निवास-गृह में तुमने कैसे प्रवेश किया?"

वीरसेन ने अपनी कहानी सुनायी और कहा "अगर चाहता तो, तुम्हारी जान लेकर अपना काम निकाल सकता था। लेकिन मैने ऐसा नहीं किया। सच कहा जाए तो मैं तुम्हारा प्राण-दाता हूँ। मेरा उपकार करना चाहती हो तो कुँकुम मुझे दो"।

घोरकी उसके सद्‌गुणों से संतुष्ट हुई और बोली "राजकुमार, मैं वह कुँकुम तुम्हें दूँगी तो तुम उसे घोरक को दोगे। तब वह अवश्य ही मुझे अपना दासी बनायेगा। इसलिए तुम मेरी एक मदद करो। मैं भी तुम्हें एक जड़ी दूँगी। रात में जब वह मानव बनकर मस्त सोता रहेगा, तब उसे मार डालो और वह डिबिया मेरे पास लाओ, मुझे दो। तुम्हें चंद्रमती भी मिलेगी। मुझे समस्त शक्तियाँ उपलब्ध होंगीं। ऐसी शक्तिमान घोरकी की सहायता, जब तुम चाहो तुम्हें मिलती रहेगी। यों तुम चंद्रमती का प्यार भी पाओगे और मेरी शक्तियों से सहायता भी"।

वीरसेन ने ना के भाव में अपना सर हिलाया और कहा "इस सृष्टि में स्त्री और पुरुष को मिल-चुलकर रहना चाहिये। तुम दोनों विवाह करोगे, दंपति बनोगे तो बिना किसी की सहायता के महाशक्तिमान बनोगे। मैने उबलते हुए तेल में नहाया क्यों? चंद्रमंती का प्यार पाने के लिए। तुम घोरक से प्रेम करो। कुँकुम का त्याग करो। जो घोरक तुम्हारी शक्तियों को पाना चाहता है, जिसमें महानशक्तिवान बनने की आकांक्षा है, वह तुम्हारा प्रेम पाने के लिए तुम्हारे सम्मुख झुक जायेगा। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि प्रेम में ऐसी अद्‌भुत शक्ति है"।

घोरकी को लगा कि उसकी बातों में सच्चाई

है। सिरहाने के तकिये के नीचे रखे हुए कुंकुम की पुडिया को उसने उसे देते हुए कहा "मैं घोरक से शादी रचाऊँगी। उसके लिए मेरी यह भेंट है।"

वीरसेन घोरक के पास गया और उसने जो हुआ, सब सुनाया और कहा "घोरकी से विवाह रचाने पर तुम सुखी रह सकते हो। चाहे, जितनी भी शक्तियाँ तुम पाओ, इस सुख के सामने वे तुच्छ हैं, मूल्यहीन हैं। उन शक्तियों से तुम्हारा जीवन एक गोरखधंधा बनकर रह जायेगा।"

जब घोरक को मालूम हुआ कि घोरकी ने उसे भेंट में पुरस्कार के रूप में कुंकुम भेजा है, तो उसे बड़ा आनंद हुआ। उसने चंद्रमती को उसके सुपुर्द किया और उन दोनों को जंगल की सीमाओं के बाहर छोड़ दिया।

जंगल के बाहर खड़े राजकुमारों को सारी बातें मालूम हुई। उन्होने उसपर निंदारोपण किया "घोरक और घोरकी बहुत ही दुष्ट हैं। कुंकुम और डिबिया जब एक जगह पर पहुँच गये हैं, तब संसार की हानि ही हानि होगी। जब कि तुम्हें उन्हें मारने का अच्छा मौक़ा मिला है, तुमने हाथ से जाने दिया। तुमने अपना स्वार्थ देखा। तुम्हें केवल अपनी ही चिंता है, दूसरों की नहीं"।

इसपर वीरसेन हँसा और बोला "प्रेम द्वेष नहीं जानता। ऐसा कोई सबूत नहीं कि केवल चंद्रमती को छोड़ कर उसने किसी और को हानि पहुँचायी हो। मेरे विषय में उसने कितनी उदारता दिखायी है, जान चुके हो। जब तक घोरक ने नहीं बताया, तब तक हम लोग जानते भी नहीं थे कि घोरकी नामक एक राक्षसी भी है। हम अनावश्यक कल्पना क्यों करें कि उनसे हमें हानि पहुँचेगी और वे हमारे शत्रु हैं। ऐसी कल्पना से हम उनकी नहीं, अपनी हानि पहुँचा रहे हैं; अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार रहे हैं।"

उसकी बातें सुनकर राजकुमार लज्जित हुए। बहुत ही शीघ्र वीरसेन और चंद्रमती का विवाह वैभवपूर्वक हूआ। उस विवाह के अवसर पर घोरक और घोरकी भी उपस्थित हुए। उन्होने वचन दिया कि विश्व-शांति के लिए प्रयास करनेवालों को उनका सहयोग अवश्य ही भरपूर मिलता रहेगा।

परिपूर्ण मानवता

विक्रमपुर के राजा की आकस्मिक मृत्यु के कारण बचपन में ही राजकुमार का राज्याभिषेक हुआ। लोक के अनुभवों तथा ज्ञान से अपरिचित राजकुमार से राजगुरु ने कहा ''जो शासक बनता है, उसे यह जानना आवश्यक है कि मानवों में मानवता किस हद तक है। जब-जब ज़रूरत पड़ेगी, मुझे अवकाश मिलेगा, मैं तुम्हें समझाता जाऊँगा''।

''यह जानने में कितना समय लगेगा'' राजकुमार ने पूछा।

''ध्यान से मानवों के चरित्रों का परिशीलन करोगे तो यह जानने में अधिक विलंब नहीं होगा।'' राजगुरु ने कहा। राजा ने ऐसा प्रबंध किया, जिससे दरबारी अपने-अपने अनुभव उसको सुनाते रहें। एक दिन एक दरबारी ने आकर उससे कहा ''महाराज, जंगल से जब मैं गुज़र रहा था, तब मेरे पैर में एक काँटा चुभ गया। जब मैं लँगड़ाकर चलने लगा तो एक आदमी दौड़ता हुआ आया और बोला ''बाघ आ रहा है, छिप जाओ''। उसने मुझे सावधान किया और स्वयं पेड़ पर चढ़ बैठा। मैं भी पेड़ पर चढ़ बैठा। मैने देखा कि थोड़ी देर में बाघ उस मार्ग से गुज़रा। उसके बाद हम दोनों पेड़ से उतरे और वहाँ से चलते बने''। राजगुरु ने पूछा ''उस आदमी के पास क्या हथियार थे?''

''थे, आदमी भी बलवान दिख रहा था'' दरबारी ने कहा।

राजगरु ने राजकुमार से कहा ''दरबारी ने जिस आदमी का जिक्र किया है, उस आदमी में मानवता एक चौथाई है। उसने सावधान तो किया कि बाघ आ रहा है, लेकिन उसने दूसरे मानव की रक्षा के प्रयत्न के बारे में सोचा नहीं। उसने तो अपनी ही रक्षा के बारे में सोचा था।''

एक और बार एक दूसरा दरबारी आया और

(पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी)

एक नयी घटना सुनायी।

एक ग़रीब को खाने को कुछ नहीं मिला। वह बहुत ही भूखा था। वह एक धनिक के घर के सामने मूर्छित हो गया। धनिक ने उसको खाना खिलाया और अपने यहाँ नौकरी पर रख लिया। एख दिन वह धनिक अपने नौकर को खूब पीट रहा था। तब रास्ते में गुज़रते हुए एक आदमी ने पूछा "क्यों उसे ऐसा पीटे जा रहे हो?"

"जब भूख के मारे मूर्छित होकर गिर गया तब मैने इसे खाना खिलाया। इससे इक़रारनामा लिखवा लिया कि जब तक यह जीवित रहेगा तब तक यह मेरी सेवा करेगा, मेरा सेवक बनकर रहेगा। जो आदमी बिक गया, उसे मैं जितना चाहूँ पीटूँगा, मारूँगा, इससे तुम्हें क्या?"

रास्ते से गुज़रनेवाले उस आदमी ने वह पत्र मँगवाया, पढ़ा और वहीं उसे फाड़ डाला। फिर उसने उस ग़रीब आदमी से कहा "आज से तुम आज़ाद हो। तुम्हारी गुलामी ख़तम हो गयी। तुम जहाँ चाहो, जैसा चाहो, घूमो, फिरो।" यह कहकर वह वहाँ से चला गया।

"रास्ते से गुज़रनेवाले उस आदमी में पचास प्रतिशत मानवता है। अगर उससे थोड़ी भी अधिक होती तो उस ग़रीब की रोज़गारी का कोई प्रबंध करता। ऐसी स्थिति में हो सकता है, उस ग़रीब को कोई दूसरा खरीद ले।"

"धनिक के बारे में आपका क्या विचार है?" राजकुमार ने पूछा।

"उसमे तो मानवता नाम मात्र के लिए भी नहीं। वह नररूप राक्षस है" राजगुरु ने कहा।

एक दिन राजसभा में दो व्यापारी आये। उनकी स्थिति बहुत ही दीन थी। जब वे क़ीमती चीज़ों को लिये रास्ते से गुज़र रहे थे, तब चोरों ने उन्हें रोका और उन्हें मार डालने के लिए तलवारें उठायीं। तब उन चोरों के सरदार ने उन्हें रोका और उनसे कहा "बेवकूफ़ कहीं के, हम अगर ऐसे लोगों को मारते जाएँ तो आख़िर हम किन्हें लूटेंगे? हमारा पेशा कैसे चलेगा?" यह कहकर उसने हमारे मार्गव्यय के लिए एक-एक को दो-दो रुपये देकर भेजा।" यों व्यापारियों ने राजकुमार को अपना दुखड़ा सुनाया।

"चोरों के सरदार में तीन चौथाई मानवता है। उसका पेशा उसके संपूर्ण मानव बनने में बाधक

बन रहा है'' राजगुरु ने कहा।

एक दिन एक सैनिक दो आदमियों को राजकुमार के सम्मुख ले आया। उनमें से एक धनिक था तो दूसरा दरिद्र।

''महाराज, उस दरिद्र को धनवान ने पानी में ढ़केल दिया और फिर स्वयं पानी में गिर पड़ा। मैं जब समीप पहुँच रहा था तब तक वे किनारे पर आ पहुँचे।'' सैनिक ने कहा।

राजा ने धनिक से पूछा ''उस आदमी को तुमने नदी में क्यों ढ़केला?'' धनिक ने जवाब में यों कहा ''महाराज, मैंने इस आदमी के विरुद्ध बहुत-से द्रोह किये। सबों का विवरण दूँगा। यह मेरे पड़ोस में ही रहता है। ग़रीब है, असहाय है। इसके स्थल को मैंने हड़प लिया। यह मेरी धूर्तता के बारे में हर एक से कहता रहा। जब मैंने देखा कि इसकी वजह से मेरी बदनामी हो रही तो मैंने इसके घर में आग लगा दी। इसके संबंध में मुझसे जब सफ़ाई माँगी गयी तो मैंने यह कहकर सबको विश्वास दिलाया कि इसकी अजागरूकता के कराण ही घर जल गया है। वह फिर से घर बना नहीं पाया। वह आज नदी के किनारे मिला और मुझसे कहने लगा कि तुमने मेरा सर्वनाश कर दिया। मैं उसकी बातों पर नाराज़ हो गया और नदी में ढ़केल दिया। गिरने के पहले उसने मुझे पकड़ लिया, जिससे मैं भी उसके साथ नदी मे गिर गया। मुझे तैरना तो नहीं आता, इसलिए जब मैं पानी में डुबकियाँ लगा रहा था, तब इसीने मुझे बचाया और मुझे किनारे पहुँचाया। जो पानी मैंने पिया, उसे उगलवा दिया। यों मेरी रक्षा की।''

राजगुरु की सलाह लेकर राजकुमार ने ग़रीब को धनिक से हरज़ाना दिलवाया। उसे बिना कोई और दंड दिये उसे भेज दिया।

बाद राजगुरु ने राजकुमार से कहा ''वह दरिद्र व्यक्ति संपूर्ण रूप से मानव है। इस कारण वह धनिक के स्वभाव में भी परिवर्तन ले आ पाया। जो परिपूर्ण मानव नहीं, वह दूसरों के स्वभाव में परिवर्तन लाकर उनमें मानवता जगा नहीं सकता''। राजगुरु के उदाहरण सहित प्रस्तुत की गयी घटनाओं से राजकुमार को मालूम हो गया कि परिपूर्ण मानवता क्या होती है?

प्रकृति : रूप अनेक

विशिष्ट तोते

तोतों में 'हीरामन तोता' नामक जाति के तोते बिरले ही मिलते हैं। इनका कंठस्वर माधुर्य से भरा हुआ होता है। यह मानव की बोली का अनुसरण बहुत ही आसानी से करता है। मुग़ल बादशाह हुमायूँ ने जब बहादूर शाह के गोग्रान क़िले पर कब्ज़ा किया था, तब उसे सोने के पिंजडे में रखा हुआ एक तोता भी मिला। रूमीखान बहादूर शाह का आदमी था। उसने हुमायूँ की मदद की। जब क़िले पर कब्ज़ा हो गया, तब वह वापस लौटा। उसे देखते ही हीरामन 'गद्दार, गद्दार' कहकर चिल्लाने लगा। पक्षियों के सुप्रसिद्ध शास्त्रज्ञ डा. सलीम अली ने कहा कि यह पक्षी कम समय में बोलियाँ सीखने में बहुत ही दक्ष है। दुर्भाग्यवश इस जाति के ये पक्षी क्षीण होते जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के क़िलों के इर्द-गिर्द बसनेवाले बेहाडिया जाति के लोग इन तोतों को देखते ही जाल फेंकते हैं और इन्हें पकड़ लेते हैं।

सोने के रंग का बंदर

बीस सालों के बाद पश्चिम बंगाल के जल्सायगुरि के समीप के एक गाँव में सोने के रंग का एक बंदर (गोल्डन लंगूर) देखा गया। उसे देखते ही 'बक्पाटैगर प्राजेक्ट' के लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह असाम के मानस जंतु संरक्षणालय में ले जाया गया। बहुत ही शीघ्र क्षीण होनेवाले जंतुओं में से यह भी एक है।

भूख से मौत

मालूम हुआ है कि ब्रिटिश द्वीपों के लगभग ७५,००० समुद्री पक्षी भूख से मर गये। ब्रिटिश द्वीपों के पूरवी तटों पर रहनेवाले समुद्री मछलियों को अधिकाधिक पकड़ते हैं। इससे मछलियों की कमी हो गयी। इन पक्षियों के आहार के लिए मछलियाँ कम पड़ जाती हैं। बताया गया हैं कि षेटलान्ड्स् में ही ५०,००० हज़ार पक्षी मर गये हैं। इनमें से ग्युलमोट, षान्स, रयाजेर बिल्स, पफिन्स नाम के पक्षियों की संख्या तो बहुत ही घट गयी है।

बार्बी की ड्रेस बनाओ प्रतियोगिता
बार्बी को पार्टी में जाना है. उसे चाहिए शानदार नई ख़ूबसूरत ड्रेस. बार्बी चाहती है कि उसकी प्यारी ड्रेस आप ही बनाएं... क्या आप बनाना चाहेंगी?
क्या करना होगा?
यहाँ दी गई बार्बी की तस्वीर काटिए. इसी आकार के लिए ड्रेस डिज़ाइन कीजिए. कपड़ा या क्रेप पेपर या फिर पेंट... जो चाहें वो इस्तेमाल कीजिए. मोती लटकाइए झिलमिल चिपकाइए और सुंदर ड्रेस बनाकर उसे बार्बी की तस्वीर पर चिपकाइए. फिर हमें भेज दीजिए.
अगर आपकी डिज़ाइन बार्बी को पसंद आ गई तो उसे बार्बी फ़ैशन्स '94 कलेक्शन में शामिल किया जाएगा. इसके अलावा 100 प्रवेशिकाओं को मुफ़्त 'बार्बी फ़ैशन्स ड्रेस' दी जाएगी.
Barbie
FROM
LEO
HTA.2002.95
अपनी प्रवेशिकाएं 15 अगस्त 1994 से पहले भेजिए. साथ में अपना नाम, उम्र और टिकटवाला आपका पता लिखा हुआ लिफ़ाफ़ा भी हो. हमारा पता:-
फ़नस्कूल (टॉय डिवीजन) लिओ हाउस, 88-सी, ओल्ड प्रभादेवी रोड, बम्बई-400 025.
हर नन्ही गुड़िया का सपना साकार.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, सितंबर, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. Seshagiri

S.G. Seshagiri

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जूलाई, '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

मई, १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **सागर तीर पर है मौज**

दूसरा फोटो : **ग्राहक की है खोज**

प्रेषक : **रूपेश.डी. बाजोरिया C/O वन्दना जनरल स्टोर्स, मैन रोड**

पंधर्कवाडा, जिला योट्‌मल, महाराष्ट्र - ४४५ ३०२

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

कैल्शियम कुमारी, टीना के कारनामे.

''सरकस और शक्ति''